मार्च-२०२२ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मार्च-२०२२

कोई राजा कोई भूखा,
ऐसा क्यों पाया जाता है?
परमेश्वर की मनमर्जी है,
या कोई घोटाला है?
दयानन्द समझाते
वह प्रभु, कर्मफलों का दाता है।
संचित कर्मभोग से सुख दुख,
प्राणी को मिल जाता है।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १२५

सफलता के 6 मूल मंत्र
1 ईमानदार बनना
2 मेहनत करना
3 मीठा बोलना
4 कृपा परम-पिता परमात्मा की
5 आशीर्वाद माता-पिता का
6 प्यार संसार का।
पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
Garam masala
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Shahi Paneer
PEACOCK KASOORI METHI
Achari Aloo masala
Veg Biryani masala
Karahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर

खाता संख्या : 310102010041518

IFSC CODE- UBIN 0531014

MICR CODE- 313026001

में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२१

फाल्गुन शुक्ल पंचमी

विक्रम संवत् २०७८

दयानन्दाब्द १९८

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

March - 2022

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २९

हलचल ३०

०४ वेद सुधा

०७ सत्यार्थ मित्र बनें

१२ धर्म और मजहब

१५ चापलूसी नहीं आराध्य के .....

१९ ब्लेम-गेम का जमाना है यह

२० वेद यदि ईश्वरीय ज्ञान है

२३ संस्कार

२६ शाकाहार बन रहा विश्व-व्यापी

२७ कथा सरित- नैतिक उत्साह

२८ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२२

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० अंक - ११

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। - ऋग्वेद १०/१२१/१०

अर्थ- हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! (त्वत्) आपसे (अन्यः) भिन्न दूसरा कोई (ता) उन (एतानि) इन (विश्वा) सब (जतानि) उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को (न) नहीं (परि बभूव) तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं (यत्कामाः) जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग (ते) आपका (जुहुमः) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें (तत्) उस-उसकी कामना (नः) हमारी सिद्ध होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतयः) स्वामी होवें।

विज्ञान-

हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। यहाँ हम पहले- 'आपसे भिन्न दूसरा कोई नहीं है' इस वाक्य की व्याख्या करते हैं। इसका अर्थ न्यायशास्त्र के अवलम्बन से करते हैं। न्याय का एक सूत्र है-

विधिविहितस्यानुवचनमनुवादः।। न्यायदर्शन २/१/६५

इस सूत्र का अर्थ कि- विध्यनुवचनं चानुवादों विहितवचनं च। पूर्वः शब्दानुवादोऽपरो अर्थवादः। जिसका पूर्व विधान करके उसी का स्मरण और कथन करना। सो भी दो प्रकार का है- एक शब्द का और दूसरा अर्थ का। जैसे 'वह विद्या को पढ़े' यह शब्दानुवाद है। 'विद्या पढ़ने से ही ज्ञान होता है' इसको अर्थानुवाद कहते हैं। इसी शास्त्र-मर्यादा से- 'आपसे भिन्न दूसरा कोई नहीं है।' ऋषि का यह वाक्य तो शब्दानुवाद है और अर्थानुवाद यह है कि 'दूसरा ईश्वर हैं ही नहीं, वह एक ही है।' कोई कह सकता है कि यह अर्थ तो व्याख्याकार का स्वतन्त्र अर्थ है। इस पर हम कहेंगे कि वेद के अर्थ का स्वातन्त्र्य किसी व्याख्याकार के पास नहीं है। तब हम सीधा वेदमन्त्रों से ऋषि की अर्थभाव छाया में अपना अर्थभाव सुसंगत करते हैं। मंत्र निम्न प्रकार है-

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव।
सर्वे अस्मिन्देवा एकवृतो भवन्ति। - अथर्ववेद १३/४/१६, १७, १८, २०, २१

इन मन्त्रों में दूसरी संख्या से आरम्भ करके शून्य पर्यन्त एक ही ईश्वर का निश्चय कराके इससे भिन्न ईश्वर भाव का अतिशयता से निषेध किया है। सर्वान्तर्यामिता से प्राप्त जड़ और चेतन द्विविध जगत् को वही देख सकता है, इसका कोई द्रष्टा नहीं है और न यह किसी का दृश्य हो सकता है। निश्चय रूप से वह एक ही है। न इससे कोई अधिक है, न उसके कोई तुल्य है। एक शब्द का तीन बार ग्रहण होने से, उसी ईश्वर से यह जगत् व्याप्त है। निगत अर्थात् निश्चित प्राप्त है, व्यापक से व्याप्य का संयोग सम्बन्ध होने से, और सजातीय विजातीय स्वगतभेद केवल एक ईश्वर में ही नहीं हो सकते, द्वितीय ईश्वर के अत्यन्त निषेध करने से। क्यों? वह एकवृत् है- अर्थात् एक चेतनमात्र वस्तु से ही जो अद्वितीय=असहाय है, सकाल जगत् रचकर धारण किया हुआ है। इसी एक सर्वशक्तिमान् परमात्मा में सब वसु आदि और देव एकवृत=एकाधिकरण ही हाते हैं; अर्थात् प्रलय में भी उसी के सामर्थ्य में लय होकर बने रहते हैं। दूसरी, वैज्ञानिक गणितीय विधा से ऊहित निष्कर्ष देखिए- 'सब संख्या का मूल एक (१) का अंक ही है। इसी एक को दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ और नव बार गणने से २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ नव अंक बनते हैं, और एक पर शून्य देने से १० का अंक बनता है। इन वेदमन्त्रों से निष्कर्ष यह है कि एक का तो निषेध किया नहीं है, अपितु इससे तो दूसरे ईश्वर का निषेध करके निश्चय कराया है। अतः एकपने में भेद नहीं और शून्य भी वह नहीं है; अर्थात् यह एक ही है और चेतनमात्र वस्तु है।'

आपसे भिन्न दूसरा कोई इसलिए भी नहीं कि- 'इससे उत्तम कोई नहीं है।' अब इन दोनों ऊहित अर्थों के विषय में प्रमाण देखिए-

यस्मान्न जातः परोऽन्योऽस्ति यऽआविवेश भुवनानि विश्वा।

प्रजापतिः प्रजया सꣳरराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षोडशी। - यजुर्वेद ८/३६

जिस परमेश्वर से उत्तम ओर दूसरा नहीं हुआ, जो परमात्मा समस्त लोकों को व्याप्त हो रहा है। मंत्र के उत्तरार्द्ध-भाग की व्याख्या करना आवश्यक नहीं है।

प्रश्न– उस परमेश्वर से उत्तम और दूसरा कोई क्यों नहीं है?

उत्तर– वेद स्वयं वेद की व्याख्या करता है। प्रमाण देखिए-

यस्माज्जातं न पुरा किं चनैव स आबभूव भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया सꣳरराणास्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षौडशी।। - यजुर्वेद ३२/५

अर्थात्– जिस ईश्वर से पहले कुछ भी नहीं उत्पन्न हुआ, जो सब ओर अच्छे प्रकार से वर्तमान है, जिसमें सब वस्तुओं के आधार सब लोक वर्तमान हैं। शेष मन्त्र का उत्तरार्द्ध दोनों में समान है, उसकी व्याख्या नहीं की जा रही है।

प्रश्न उत्पन्न होता है कि उससे पहले कुछ भी क्यों उत्पन्न नहीं हुआ? क्योंकि वह अनादि है, इस कारण से। वही सब प्रजाओं में व्याप्त होकर सब जीवों के कर्मों को देखता और उनके अनुकूल फल देता हुआ न्याय करता है, सबसे उत्तम है।

प्रश्न– उसका कोई तिरस्कार नहीं कर सकता, अर्थात् वह सर्वोपरि है; इसका क्या अर्थ है?

उत्तर– 'उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को आपसे भिन्न दूसरा कोई नहीं तिरस्कार करता है।' **'एतानि'** ये जीव प्रकृत्यादि वस्तुएँ **(जातानि)** उत्पन्न हुए अर्थात् इच्छा रूपादि गुण विशिष्ट से युक्त हैं। अभिप्राय यह है कि इच्छा आदि तो जीवों में होते हैं- इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख और ज्ञान चेतन जीव के गुण हैं। क्योंकि इच्छादि गुण शरीरों में उत्पन्न नहीं होते हैं, मृतों में नहीं पाये जाने से; और रूपादि गुण अव्यक्त प्रकृति से उत्पन्न व्यक्त कार्य जगत् में स्थूल होने से पाए जाते हैं। उन इच्छा-रूपादि गुण विशिष्ट अर्थात् उन अप्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष-जगत् हुए जड़-चेतनादिकों को आपसे भिन्न दूसरा कोई नहीं तिरस्कार करता है, क्योंकि आपसे उत्तम, आपसे पृथक् कोई और नहीं; और आपसे पहले और कोई नहीं उत्पन्न हुआ। ये सब पदार्थ प्रलय में आप में थे और आपसे उत्पन्न हुए। इसलिए आपसे यह संसार नीचगुणों वाला होने से आपका तिरस्कार नहीं कर सकता- सर्वोपरि तो आप ही हो।

'परि बभूव' क्रिया के दो अर्थ हैं-

(क) **'परि'** उपपद पूर्वक **'भू'** धातु से 'परि बभूव' बनता है, जिसका अर्थ है- अवज्ञान अर्थात् तिरस्कार या निरादर। पाणिनी जी महाराज के सूत्र **'परौ भुवोऽवज्ञाने'** (अष्टाध्यायी ३/३/५५) से यह अर्थ स्पष्ट होता है। और-

(ख) दूसरा अर्थ है कि- आपसे भिन्न दूसरा कोई इन जड़-चेतनादिकों को नहीं जान कसते है; क्योंकि अन्तर्यामी आप ही हो। इसीलिए भी तिरस्कार नहीं करता- स्पष्ट अर्थ है। ऐसा जो प्रजापति अर्थात् जिसको सब प्रजा के स्वामी परमात्मन् कहकर सम्बोधन किया है, वह प्रजापति कैसा है?

उसका वर्णन एक मन्त्र द्वारा देखिए-

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा।। - यजुर्वेद ३१/१९

वही प्रजापति सब जगत् का स्वामी है। वह **गर्भे**- गर्भस्थ जीव में और सबके हृदय में तथा अन्तर्गर्भे= जड़ जगत् के बीच में भी अन्तर्यामी रूप से **'अजायमान'** अर्थात् स्व-स्वरूप से अनुत्पन्न= अपने स्वरूप से उत्पन्न नहीं होने वाला 'अज' नित्य विचरता है। उसके सामर्थ्य से ही यह जड़-चेतन सकल जगत् बहुत प्रकार से विशिष्टता से पैदा होता है।

दूसरा भाव यह है कि वह स्व-स्वरूप से अनुत्पन्न हुआ बहु प्रकार से प्रकट होता है; अर्थात् उस जगत् के पदार्थों में प्रविष्ट होकर बहुप्रकार- अनेक प्रकार से प्रसिद्ध होता है। जो उस पर ब्रह्म की प्राप्ति का कारण, सत्य का आचरण और सत्यविद्या है, उसको विद्वान् लोग ध्यान से देखके परमेश्वर को प्राप्त होते हैं। जिसमें सब भुवन अर्थात् लोक ठहर रहे हैं, उसी परमेश्वर में

ज्ञानी लोग भी सत्य निश्चय से मोक्षसुख को प्राप्त होके जन्म-मरण आदि आने-जाने से छूट के आनन्द में सदा रहते हैं। विद्वान् ध्यानी लोग ऐसे प्रजापति परमेश्वर को जानकर यही कहेंगे- 'आप हमारे आधार हो' अब तो हम-

''जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उस-उस की कामना हमारी सिद्ध होवे।''

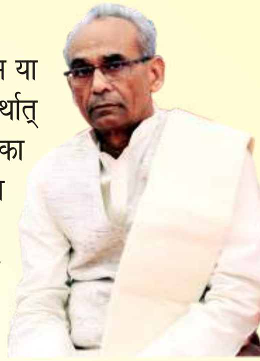

यह दृढ़ सिद्धान्त है कि परमात्मा ऐसे ध्यानी लोगों की, जिस-जिस पदार्थ की कामनावाले= जिस-जिस काम या पदार्थ की अभिलाषा करते हैं, वे कामनाएँ प्राप्त हो जाती हैं, और काम=कामना उस ईश्वर में निकाम अर्थात् कामना=अभिलाषा ही छूट जाती हैं; उसका आश्रय= कृपा ही ऐसी है। तभी वह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत् का पालक= स्वामी प्रजापति अपने आश्रय में आए हुए उपासकों को विद्या और चक्रवर्ती राज्य से उत्पन्न लक्ष्मी= सब ऐश्वर्यों का स्वामी बनाता है।

बड़ी बात यह है कि ईश्वरभक्ति से ओतप्रोत यह धन और ऐश्वर्य उस व्यक्ति के दास बन जाते हैं। बिना उसकी कृपा से धन-ऐश्वर्य व्यक्ति को अपना दास अर्थात् आलस्य-प्रमाद और भोगविलासों के अत्यन्त दुःखसागर में डूबो देता है। इसलिए हम धनैश्वर्यों के स्वामी होते हैं।

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली
साभार- उपासना-विज्ञान

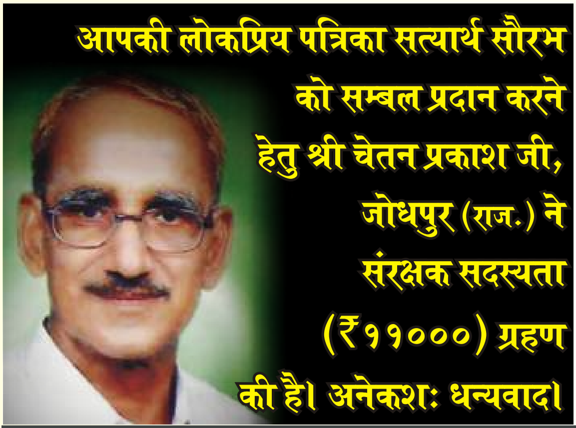

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकर बड़ी खुशी हुई साथ ही दयानन्द जी हमारे जीवन में जो प्रकाश लाये हैं उससे परिवर्तनशील समाज की स्थापना के साथ ही

१. रुढ़िवादिता का अन्त, २. आधुनिकता की ओर समाज अग्रसर, ३. पारिवारिक समस्या के निदान में सहयोग मिला।, ४. पाश्चात्य संस्कृति में भारतीय संस्कृति को उजागर किया।, ५.पारिवारिक समस्याओं के साथ सामाजिकता के अनुभवों के साथ समस्या निवारण में सहयोगी है।

- कुलदीप जलुपरियां

यहाँ आर्ट गैलेरी में आया तो बिना मन से था लेकिन जैसे ही अन्दर प्रवेश किया तो अद्भुत! गैलेरी में ऐसे रहस्य खुलते गये की जिसको हम नहीं जानते उनके बारे में जानकारी प्राप्त हुई। सत्यार्थ प्रकाश और दयानन्द सरस्वती, रामायण, महाभारत के बारे में शुद्ध ज्ञान प्राप्त करना हो तो इस आर्ट गैलेरी में आना अनिवार्य है, यहाँ मानव जीवन के सोलह संस्कार का चित्रण भी अद्भुत है। धन्यवाद।

- गजानन्द यादव, ग्राम-भाभोद, तहसील विराटनगर, जिला जयपुर

गुलाब बाग एक रमणीय स्थल है। इस हरियाली के बीच एक शानदार आध्यात्म केन्द्र है जिसका नाम नवलखा महल है। जो सनातन संस्कृति के प्रणेता एवं आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन को बखूबी दर्शाता है। जो अपनी भारतीय संस्कृति को अगर जानना एवं समझना चाहता है वो बिना सोचे इस स्थल पर आ जाये उसके सारे प्रश्नों का उत्तर यहाँ मिल जायेगा। धन्यवाद।

- निर्मल कुमार भट्ट

सत्यार्थ मित्र बनें

संस्कार वीथिकास्थ (पुंसवन संस्कार)

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।**

न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर

बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

आचार्य सत्यजित्, रोजड़

श्री अविनाश तापड़िया, उदयपुर

श्री अम्बालाल सनाढ्य, उदयपुर

डॉ. गजराज सिंह, फरीदाबाद

डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर

डॉ. विजय कुमार सिंघल, आगरा

श्री जगदीश साहू, उदयपुर

माता विमला ग्रोवर, फरीदाबाद

श्री देवेन्द्र सिंह, श्रीगंगानगर

श्री सुकृत मेहरा, उदयपुर

श्री सुयश गर्ग, भरतपुर

आर्य समाज; हिरणमगरी, उदयपुर

श्री जितेन्द्र नेभनाणी, उदयपुर

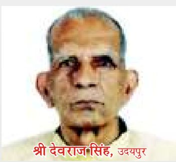

श्री देवराज सिंह, उदयपुर

श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल, उदयपुर

श्री शालीन सूद, उदयपुर

घूँघट छोड़ो दुनिया देखो

अभी देश में हिजाब को लेकर एक व्यापक बहस छिड़ गयी है जिसकी बिलकुल भी आवश्यकता नहीं थी। मामला एक विद्यालय का था। कर्नाटक के एक कानून के अनुसार विद्यालय में ड्रेस कोड था जो उचित भी है क्योंकि विद्यालय में ऐसी समस्त स्थितियों का निराकरण होना चाहिए जिनसे आपस में किसी भी प्रकार के भेद को विस्तार मिले। uniformity विद्याकाल में वांछनीय ही नहीं अत्यावश्यक है। विद्यालय में ज्ञानार्जन ही मुख्य है बाकी सब गौण। इसीलिए भारतीय शिक्षा पद्धति में सभी विद्यार्थियों को एक समान खान पान वस्त्रादि का सेवन अनिवार्य माना गया है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

'सब को तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिये जायें, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों। सबको तपस्वी होना चाहिये।' जाति, कुल, गोत्र, वंश और मजहब, इनका लेशमात्र भी प्रभाव विद्यार्थियों के मध्य न होने पावे, यह विद्यालय प्रशासन का कर्तव्य है, अतः इनको बढ़ावा देने वाले किसी भी प्रसंग का अवसर भी उपस्थित न हो सके ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। यह तभी सहज होगी जब इन विभेदों को दर्शाने वाले बाह्य चिह्नों को नकारा जाएगा।

हिजाब का सम्पूर्ण विवाद आज राजनेताओं का प्रिय खेल बन गया है। हास्यास्पद बयानों की झड़ी लग गयी है। एक नेत्री ने जब यहाँ तक कह दिया कि यह लड़की की इच्छा है कि वह हिजाब पहने, बिकनी पहने या जींस पहने तो हमें अत्यन्त दुःख हुआ कि जिस देश के शीर्ष नेता राजनीति चमकाने हेतु ऐसे अनर्गल वक्तव्य देंगे तो उस देश को कौन बचा सकेगा? यहाँ बात केवल और केवल विद्यालय और विद्यार्थियों की है, उनके द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों की uniformity की है। वहाँ वस्त्र विभेदों को दर्शाने वाले न हों, विद्यालय के ड्रेस कोड का पालन हो विषय यह है, यहाँ बिकिनी कहाँ से घुस गयी? क्या बच्चियाँ बिकिनी पहन कर विद्यालय जायँ? वैसे यहाँ हम केवल संकेत कर दें कि हर जगह की अपनी पोशाक होती है और वहाँ उसे ही पहनना उचित और सहज होता है। अपने शयन कक्ष में आप स्वतंत्र हैं कि क्या पहनते हैं। जब आप बाजार अथवा मॉल जाते हैं तो शायद ही कोई शयन कक्ष के वस्त्रों में जाता होगा। उसी प्रकार समारोह के वस्त्र अलग होते हैं, तो खेल कूद के अलग। जब कोई श्मशान जाता है तो अलग वस्त्र होते हैं। या तो कानून से या प्रथा से या मर्यादा से इन सबका पालन होता है। इन पर कभी विवाद देखा नहीं गया। महिला हॉकी और क्रिकेट की बात करें तो विश्व भर में रंग को छोड़कर इनमें साम्य पाया जाता है। रंग देश की identity हो जाती है। इनमें कई खिलाड़ी मुस्लिम भी होंगी। क्या किसी ने हिजाब के लिए आग्रह किया? क्या टेनिस स्टार सानिया मिर्जा ने हिजाब पहन कर टेनिस खेला? तो क्या वे मुस्लिम नहीं रहीं?

हर संस्था का अपना एक डेकोरम होता है। ड्रेस भी होती है जो अनिवार्य होती है। मुझे स्मरण है कि कुछ वर्ष पूर्व एक कोर्ट में 'ऑन लाईन' सुनवायी के समय जज साहब ने सुनने से इनकार कर दिया क्योंकि घर से ऑन लाईन सम्मिलित होने वाले वकील साहब ने काला कोट नहीं पहन रखा था, वे कमीज में थे। क्या आप समझते है कि कोर्ट में कोई वकील बिना काले कोट के या जज साहब बिना गाउन के आ सकते हैं अथवा इन निर्धारित ड्रेस के अलावा अन्य कुछ पहनेंगे तो उन्हें स्वीकृति होगी? कदापि नहीं।
वर्तमान मसले का पूरी तरह राजनीतिकरण कर देश को एक नए विवाद में झोंक दिया गया है जो दुर्भाग्य पूर्ण है। 'हमारी पहचान हमारा हिजाब' सुदूर दक्षिण से उत्तर तक विस्तीर्ण हो गया है। इसकी प्रतिक्रिया में आप भगवा स्कार्फ देख ही चुके हैं, जो अभी उडुपी में दिखे हैं, पर उन्हें देश भर में फैलने में क्या समय लगेगा? कुछ संस्थाएँ योजनाबद्ध रूप से यह कार्य कर रहीं हैं यह सामने आ गया है और आने वाले समय में सारा मामला साफ हो जायेगा। अब यह मामला कोर्ट में है। इन पंक्तियों को लिखते समय तक निर्णय नहीं आया है।
जहाँ तक हम समझते हैं कोई यह नहीं कह रहा कि हिजाब को प्रतिबन्धित किया जाय और अगर कोई कहता है तो हमारी समझ में अनुचित है क्योंकि जिन स्थानों पर समुचित कोई नियम नहीं है, वहाँ कोई भी स्वेच्छानुसार मर्यादित वस्त्र पहनता है तो किसी को क्या और क्यों एतराज हो सकता है।

नवलखा महल अन्तर्गत चित्रदीर्घा

बहुत वर्षों पूर्व हम एक अतिप्रसिद्ध संस्था के एक दर्शनीय परिसर में गए थे। उन्होंने वहाँ दो नियम बना रखे थे। एक तो वे उन महिलाओं को जो घुटनों से ऊपर की स्कर्ट पहने हों तथा दूसरे जो तम्बाखू आदि अपने पास रखे हों, उन्हें प्रवेश नहीं देते थे। अब आप भले ही इसकी आलोचना करें पर यह वहाँ का नियम था। अनेक धार्मिक स्थलों जैसे गुरुद्वारे में सर पर कुछ ढ़कने की आवश्यकता होती है वहाँ अगर आपको जाना है तो उनका यह नियम मानना ही होगा। अन्यथा आप स्वतन्त्र हैं न जाएँ। हम नवलखा महल की बात करें तो कोई भी मर्यादित वस्त्र पहने कोई बन्धन नहीं रखा गया है। यहाँ मुस्लिम भाई बहिन आते रहते हैं। उनमें हिजाब पहिने मुस्लिम बहिनें होती हैं, कोई प्रतिबन्ध नहीं। वस्तुतः यह विवाद था ही नहीं इसे बनाया गया है। मुस्लिम बहिनें आज प्रदर्शन कर रहीं हैं कि हिजाब उनकी पहचान है। अगर वे चाहती हैं तो अवश्य पहिनें। इसमें किसी दूसरे को क्या ऐतराज हो सकता है, हाँ यह अवश्य है कि हमारी सम्मति में यह नारी उन्नति में बाधक है और औचित्यहीन है और यह भी है कि अब सम्भवतः बात हिजाब की नहीं बुर्के और नकाब की हो गयी है, जैसा कि प्रदर्शन करने वाली सभी मुस्लिम बहिनें बुरका और नकाब डाले हैं, तो यह हमें प्रतिगामी ही लगता है जैसे कि हिन्दुओं में पर्दा प्रथा थी और आज भी किसी सीमा तक है।
आर्यसमाज ने पर्दाप्रथा के विरुद्ध समर्थ आवाज उठायी थी। एक बात अवश्य है कि हिन्दुओं में भी समय-समय पर अनेक क्षेत्रों में कुरीतियाँ घर कर गयीं थीं और वे भी ऐसे कि हिन्दू उन कुरीतियों के पाश में आबद्ध होकर उसी प्रकार प्रसन्न थे जैसे कि आज मुस्लिम बहिनें हिजाब और बुर्का आदि को लेकर दिख रहीं हैं क्योंकि उन कुरीतियों को वे भी हिन्दू धर्म की पहचान समझ बैठे थे। एक उदाहरण- किसी समय में हिन्दू धर्म में समुद्र यात्रा पाप समझ ली गयी थी और अगर कोई हिन्दू समुद्र यात्रा कर ले तो उसे धर्मच्युत् माना जाता था और उसके प्रायश्चित की व्यवस्था थी। इस कुरीति का परिणाम यह हुआ कि भारत का प्रभाव जो निर्यात के क्षेत्र में कभी विश्व में शीर्ष पर था, सिकुड़ गया, उसी प्रकार आज बुर्के, नकाब का समर्थन करतीं मुस्लिम बहिनें यह नहीं समझ रहीं हैं कि इससे उन्हीं की प्रगति का मार्ग अवरुद्ध होगा। परन्तु हिन्दू धर्म की यह विशेषता रही है कि हर कुरीति के विरुद्ध कोई न कोई महापुरुष खड़ा हो गया और उसने प्रबल शब्दों में स्थापित किया कि यह प्रथा कुरीति है और हिन्दू धर्म का अंग नहीं है और इस प्रकार उस कुरीति को समूल नष्ट करने में सफलता प्राप्त की। आर्य समाज ने तो ऐसे सभी सुधारों को लेकर समग्र क्रान्ति का बिगुल बजा दिया था, यह सभी जानते हैं। परन्तु न जाने क्यों पहली बात तो मुस्लिम मत में जो प्रतिगामी प्रथाएँ हैं उन्हें दूर करने की बजाय मुस्लिम विद्वानों का यही प्रयास रहा है कि वे धर्म के अटूट अंग के रूप में बनीं रहें। वे बुद्धिपूर्वक उन पर विचार नहीं करना चाहते। जबकि देश काल के अनुसार मानव प्रगति के लिए परिवर्तन आवश्यक प्रतीत हो सकते हैं। कम से कम उन पर विचार करने की कोई पद्धति तो होनी चाहिए। परन्तु मुस्लिमों में ऐसी सुधार की आवाज प्रखर हुयी ऐसा लगता नहीं। परन्तु यह उनकी समस्या है यह मान लेना ही श्रेयस्कर है क्योंकि अन्य कोई कहे तो उनको अपने धर्म के विरुद्ध षड्यंत्र लगता है। सोचिये ट्रिपल तलाक को अमान्य करने से क्या लाखों लाख मुस्लिम बहिनों को राहत नहीं मिली पर तब भी इसका विरोध किया गया और आज तक भी किया जाता है।
जावेद अख्तर साहब ने कहा था कि अगर हिजाब को प्रतिबन्धित करने की माँग है तो फिर घूँघट को भी प्रतिबन्धित किया जाय।

जावेद साहब शायद यह नहीं समझ रहे हैं कि कई मसले ऐसे होते हैं जिनका इलाज कानून नहीं समाज सुधार के कार्यक्रम हैं। अतः उन जैसे प्रगतीशील मुस्लिमों (यदि वे हैं तो) को तो हिजाब का विरोध और उसे दूर करने के उपायों का अवलम्बन करना चाहिए, जैसे हिन्दू सुधारकों ने घूँघट का विरोध किया और आज भी कर रहे हैं। 'घूँघट छोड़ो दुनिया देखो' का अभियान ऐसा ही प्रयास था। अभी राजस्थान सरकार के विधायक और मुख्यमंत्री जी के सलाहकार श्री संयम लोढ़ा ने घोषणा की है कि यदि किसी गाँव में एक भी महिला बिना घूँघट मिलेगी तो वे इस ग्राम पंचायत को २५ लाख रुपये देंगे। ऐसी कोई घोषणा क्या हिजाब आदि के निषेध के लिए मुस्लिम समाज में की जा सकती है? संयम लोढ़ा की उक्त घोषणा का हिन्दू समाज में कोई विरोध नहीं हुआ। अगर आप अपने समाज का वास्तव में हित चाहते हैं तो ऐसे प्रगतिशील प्रयास करने चाहिए। हम तो चाहते भी हैं और प्रयास भी करते हैं कि हिन्दू महिलायें जो भी घूँघट करतीं हों शीघ्र इसे त्याग दें।

अब अकादमिक दृष्टि से संक्षेप में ही सही, इस पर भी लिखना युक्त लगता है कि क्या हिजाब मुस्लिम धर्म का अभिन्न भाग है? इस पर कर्नाटक उच्च न्यायालय विचार कर रहा है और अभिन्न हिस्से की क्या परिभाषा है यह हमें नहीं पता, पर कोई निर्देश कुरआन में होने से वह अभिन्न हिस्सा हो जाता है तो जितना हमने पढ़ा है हमें लगता है यह निर्देश तो है। पर फिर कुरआन में तो ब्याज न लेने, शराब न पीने, आदि अनेक निर्देश हैं। मुस्लिम समाज में ब्याजबन्दी, शराबबन्दी के विशेष प्रयत्न किये गए हों ऐसा दिखा नहीं। मुस्लिम गृहस्थों ने और बॉलीवुड में जो मुस्लिम सितारे भरे पड़े हैं उन्होंने ऐसे किसी निर्देश के उल्लंघन से बचने की भी कोशिश की हो ऐसा नहीं दिखता। बॉलीवुड मुस्लिम अभिनेत्रियों में से कितनी हिजाब पहनती हैं? उनके वस्त्रों के बारे में तो क्या ही लिखें? तो क्या इनको कभी बहिष्कृत किया गया है या फिर यहाँ भी 'समरथ को नहीं दोष गुसाईं' की तर्ज पर ये सारे निर्देश गरीब मुस्लिमों तक सीमित हैं?

जितना हमने देखा है कुरआन की आयतें किसी विशेष कारण से अवतरित होती दिखायी देती हैं और वह प्रकरण इसे समझाने के लिए महत्वपूर्ण होता है। हदीसों में हिजाब से सम्बन्धित प्रकरण मिल जाते हैं। हदीसों के वे स्थल नीचे उद्धृत हैं, जिनसे यह भी ज्ञात होता है कि हिजाब की बात कुरआन में काफी बाद में आयी है।

हदीस ४७९० सहीह अल बुखारी के अनुसार

Narrated `Umar:

I said, "O Allah's Messenger (ﷺ)! Good and bad persons enter upon you, so I suggest that you order the **mothers of the Believers (i.e. your wives) to observe veils."** Then Allah revealed the Verses of Al- Hijab.

अर्थात् उमर ने मुहम्मद साहब को अपनी पत्नियों को परदे में रखने को कहा था तब हिजाब की आयत उतरी।

Sahih al Bukhari 146 के अनुसार आयशा हिजाब की आयत के उतरने का वर्णन करती हैं और सौदा वाली घटना का जिक्र करती हैं

Narrated `Aisha:

The wives of the Prophet (ﷺ) used to go to Al-Manasi, a vast open place (near Baqi` at Medina) to answer the call of nature at night. `Umar used to say to the Prophet (ﷺ) "**Let your wives be veiled**," but Allah's Apostle did not do so. One night Sauda bint Zam`a the wife of the Prophet (ﷺ) went out at `Isha' time and she was a tall lady. `Umar addressed her and said, "I have recognized you, O Sauda." He said so, as he desired eagerly that the verses of Al-Hijab (the observing of veils by the Muslim women) may be revealed. So Allah revealed the verses of "Al-Hijab" (A complete body cover excluding the eyes).

ब्रेकेट में लिखे भाव तफसीरकार के स्वयं के हैं, अनेकों विद्वानों के अनुसार हिजाब के यह मायने नहीं हैं।

एक और हदीस के अनुसार अनस के अनुसार यह जैनब वाली घटना के बाद घटी। जब मुहम्मद साहब ने जैनब से विवाह किया। अनस के हवाले से वर्णन है कि जैनब से विवाह के उपलक्ष में मुहम्मद साहब ने दावत दी थी। लोग थे कि खाना खाने के बाद भी नहीं जा रहे थे और तीन लोग तो मुहम्मद साहब की व्यग्रता के बाद भी उठने की जल्दी नहीं कर रहे थे। खैर अंततोगत्वा वे चले

गए तो मुहम्मद साहब और अनस जैनब के कमरे में गए तो मुहम्मद साहब ने अपने और अनस के बीच में पर्दा कर लिया और अनस के अनुसार तब हिजाब की आयत उतारी। (मूल शब्दों के लिए हदीस देखें : Sahih al Bukhari 4793)

वो आयतें दो बतायी जाती हैं ।

और (हे नबी) ईमान वाली स्त्रियों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें और अपना शृंगार न दिखाएँ सिवाय उसके जो उसमें से जाहिर रहे, और अपने सीनों पर अपनी ओढनियों के अंचल डाले रहें और वे अपना शृंगार किसी पर जाहिर न करें सिवाय ....और वे अपने पाँव भूमि पर मारते हुए न चलें कि अपना जो शृंगार छिपा रखा हो लोगों को उसकी खबर हो जाय (२४.३१)

हे नबी! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमान वालों की स्त्रियों से कह दो कि वे (बाहर निकलें तो) अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें। इसमें इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जायँ और सताई न जायँ। अल्लाह बड़ा क्षमाशील और क्षमा करने वाला है। (३३.५९)

जैनब और सौदा वाली हदीसों से यह स्पष्ट हो रहा है मुख्यतः मुहम्मद साहब की पत्नियाँ शारीरिक रूप से ढ़की रहें और नजरें नीची रखें इस उद्देश्य से ये निर्देश आये। उक्त आयत को मुस्लिम विद्वानों ने भी इसी प्रकार व्याख्यायित किया है कि 'इस प्रकार ढ़की महिलाओं को शरीफ समझा जाएगा और उनसे किसी प्रकार की अनुचित आशा नहीं की जा सकेगी। आज भी लोग जो तर्क दे रहे हैं उसी प्रकार के तर्क दे रहे हैं। कोई मोबाइल के कवर से इसकी तुलना कर रहा है, तो कोई कह रहा है कि कीमती सामान को छिपाकर ही रखा जाता है। इस प्रकार की तस्वीरें भी वायरल हो रहीं हैं जिसमें खुली कमोडिटी पर मक्खियाँ भिनभिना रहीं हैं।

इस मानसिकता को अंततोगत्वा मुस्लिम बहनों को ही समझना पड़ेगा, कि उनके लिए क्या लाभकारी है? जो लोग इसे मुस्लिम महिलाओं का शोषण बता रहे हैं उनका खण्डन करने के लिए ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का कहना है कि मुस्लिम महिलाएँ आगे आकर कहें कि हिजाब बुर्के आदि से उन पर अत्याचार नहीं हो रहा है, बल्कि उनका सम्मान होता है। उन्होंने हिजाब को एक मुस्लिम और एक सम्मानित महिला की पहचान करार दिया। उनका कहना है कि समाज के 'शैतानी पक्ष' से हिजाब महिलाओं को बचाता है। सम्भवतः इसी कारण योजनाबद्ध तरीके से मुस्लिम महिलायें बड़ी संख्या में प्रदर्शन कर रहीं हैं।

मुस्लिम उलेमा आज विश्व भर में घट रही घटनाओं की ओर देख कर भी नहीं नहीं देख रहे जो हिजाब के भविष्य के बारे में इशारा कर रहीं हैं। अनेक मुस्लिम देशों ने हिजाब को प्रतिबन्धित किया, कोई नहीं बोला। इण्डोनेशिया के २० से अधिक प्रान्तों में कई स्कूलों ने हिजाब को स्कूली छात्राओं के यूनिफार्म के तहत अनिवार्य बना रखा था। ये नियम न सिर्फ छात्राओं, बल्कि महिला शिक्षकों के लिए भी था। इण्डोनेशिया में आधिकारिक रूप से ६ धर्मों को मान्यता प्राप्त है, लेकिन वहाँ की ८६.७% जनसंख्या मुस्लिम है। अब वहाँ के स्कूल किसी मजहबी वस्त्र को यूनिफार्म का हिस्सा नहीं बना सकते।

रूस के कई शहरों में साल २०१२ में स्कूलों या कॉलेजों में हिजाब को लेकर प्रतिबन्ध लगाया गया था। हालाँकि, सरकार के इस फैसले को अदालत में चुनौती दी गई थी। लेकिन अदालत ने भी सरकार के पक्ष में फैसला सुनाया। सीरिया में मुस्लिम आबादी की तादाद करीब ७० फीसदी है, वहीं इजिप्ट में मुस्लिम आबादी करीब ९० फीसदी है। यहाँ की सरकारों ने विश्वविद्यालयों में क्रमशः २०१० और २०१५ से पूरा चेहरा ढकने पर प्रतिबन्ध लगा रखा है।

बुल्गारिया में अगर कोई भी महिला चेहरा ढकती है तो उसे १२००० रुपए तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। इसके अलावा सीरिया में २०१० में कॉलेजों में हिजाब पहनने पर रोक लगाया गया था।

परन्तु भारत में ऐसा कुछ हुआ नहीं है फिर भी पाकिस्तान और अनेक देश व अनेक तथाकथित बुद्धिजीवी शोर मचा रहे हैं। नार्वे में जब यह प्रतिबन्ध लगा तो मलाला युसुफजई जिन्हें नार्वे ने नोवल पुरस्कार दिया था चुप रहीं पर आज ऐसा प्रकट कर विरोध कर रहीं हैं मानो भारत में मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा से वंचित किया जा रहा है।

बात वस्तुतः यह है कि भारत में हिजाब प्रतिबन्धित किसी भी सरकार ने नहीं किया है। केवल बात विद्यालयों की है, जहाँ वस्त्रादि में एकरूपता होना उचित प्रतीत होता है। और यह एकरूपता सभी मजहबों पर लागू है किसी एक को भी छूट नहीं देता। अगर चुनावों का अवसर नहीं होता तो कोई इश्यू नहीं बनता यह तय है। अब इसका अन्त कैसे होगा यह कोर्ट का निर्णय और भविष्य तय करेगा। डर इस बात का है कि हिजाब की आड़ में इस अवसर को अच्छा मौका समझ पितृसत्तात्मक मनोवृत्ति के लोग नकाब और बुर्का अनिवार्य न कर दें। इस पर अन्ततोगत्वा मुस्लिम बहिनों को ही सोचना पड़ेगा।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

एक प्रवासी हिन्दू भारतीय की बिटिया ने किसी मुस्लिम से विवाह का निश्चय किया तो वह बड़े दुःखी हुए। उन्होंने समझाने का प्रयास किया कि यह उसके लिए, परिवार के लिए और अपने समाज के लिए भी अच्छा न होगा। तब बिटिया ने कहा, 'मगर पापा, आप ही ने तो सिखाया था कि सभी धर्म समान हैं और एक ही ईश्वर की ओर पहुँचने के अलग-अलग मार्ग हैं। तब यह आपत्ति क्यों?' कहने की आवश्यकता नहीं कि पिता को कोई उत्तर न सूझ पड़ा।

वस्तुतः असंख्य हिन्दू, विशेषकर उनका सुशिक्षित वर्ग, अपनी सद्भावना को अनुचित रूप से बहुत दूर खींच ले जाते हैं। सभी मनुष्य ईश्वर की सन्तान हैं, यह ठीक है। सभी मनुष्यों को समान समझना और सद्भाव रखना चाहिए यह भी उचित है। किन्तु इस का अर्थ यह नहीं कि विचार धाराओं, विश्वास, रीति-नीति, राजनीतिक, सामाजिक, कानूनी प्रणालियों आदि के भेद भी नगण्य हैं। धर्म और मजहब का भेद तो और भी बुनियादी है। भारत के 'धर्म' को पश्चिम के 'रिलीजन' का पर्याय समझना सब से घातक भूल है। इसी से दूसरी भूलों का स्रोत जुड़ता है।

धर्म आचरण से जुड़ा है, जबकि रिलीजन विश्वास से। धर्म कहता है आपका विश्वास कुछ भी क्यों न हो, आपका आचरण नीति, मर्यादा, विवेक के अनुरूप होना चाहिए। यही धर्म है। इसीलिए भारतीय समाज में ऐसी अवधारणाएँ और शब्द हैं जिनके लिए पश्चिमी भाषाओं में कोई शब्द नहीं है। जैसे, राज-धर्म, पुत्र-धर्म, क्षात्र-धर्म, आदि। दूसरी ओर, आप का आचरण कुछ भी क्यों न हो, यदि आप कुछ निश्चित बातों पर विश्वास करते हैं तो आप ईसाई या मुस्लिम रिलीजन को मानने वाले हुए। इसीलिए उन के बीच रिलीजन को 'फेथ' भी कहा जता है। बल्कि फेथ ही रिलीजन है।

निजामुद्दीन औलिया का एक प्रसंग है जिसमें वह कहते हैं कि उलेमा का हुक्म बिना ना-नुच के मानना चाहिए। इससे उसे लाभ यह होगा कि 'उस के पाप उसके कर्मों की किताब में नहीं लिखे जाएँगे'। जबकि हिन्दू परम्परा में किसी के द्वारा कोई पाप करना या अनुचित कर्म करना ही अधर्म है। प्रत्येक हिन्दू यह जानता है। मिथिलांचल के गंगातटीय क्षेत्र में लोकोक्ति है, 'बाभन बढ़े नेम से, मुसलमान बढ़े कुनेम से'। इसे जिस अर्थ में भी समझें, पर अंततः यह धर्म और मजहब (रिलीजन) की पूरी विचार-दृष्टि के विपरीत होने का संकेत है। इस में कोई दुराग्रह नहीं है, वरन् सामान्य हिन्दू का सदियों का अवलोकन है। ध्यान से देखें तो औलिया की बात और यह लोकोक्ति एक दूसरे की पुष्टि ही करती हैं। विडंबना यह है कि शिक्षित हिन्दू इस तथ्य से उतने अवगत नहीं हैं। वह नहीं जानते कि रिलीजन और धर्म का बुनियादी भेद मात्र आध्यात्मिक ही नहीं, अपनी सामाजिक, वैचारिक, नैतिक, राजनीतिक निष्पत्तियों में भी बहुत दूर तक जाता है।

यद्यपि धुँधले रूप में अपने अंतःकरण में कई हिन्दू इस तत्व को न्यूनाधिक महसूस करते हैं। अपने को सेक्यूलर, आधुनिक, वामपन्थी कहने वाले हिन्दू भी। किन्तु इस सच्चाई

को खुलकर कहने, विचार-विमर्श में लाने में संकोच करते हैं। मुख्यतः राजनीतिक-विचारधारात्मक कारणों से।

इसीलिए वह प्रायः ऐसी स्थिति में फँस जाते हैं जिससे साम्राज्यवादी विचारधाराएँ उन्हें अपने ही शब्दों से बाँध कर शिकार बना लेती हैं। तब उदारवादी हिन्दू छटपटाता है, किन्तु देर हो चुकी होती है।

यह मात्र निजी स्थितियों में ही नहीं, सामाजिक राजनीतिक मामलों में भी होता है। हिन्दू उदारता का प्रयोग उसी के विरुद्ध किया जाता है। उस की दुर्गति इसलिए होती है कि हिन्दू शिक्षित वर्ग, विशेषकर इस का उच्चवर्ग अपनी परिकल्पनाओं को दूसरों पर भी लागू मान लेता है। वह रटता है कि सभी धर्म एक समान हैं, किन्तु कभी जाँचने-परखने का यत्न नहीं करता कि क्या दूसरे धर्मावलम्बी, उन की मजहबी किताबें, उन के मजहबी नेता, निर्णयकर्त्ता भी यह मानते हैं? यदि नहीं, तो ऐसा कहकर वह अपने आपको निहत्था क्यों कर रहा है?

ऐसे प्रश्नों पर समुचित विचार करने में एक बहुत बड़ी बाधा सेक्यूलरवाद है। इस का प्रभाव इतना है कि इस झूठे देवता को पूजने में कई हिन्दूवादी भी लगे हुए हैं। यह किसी विषय को यथातथ्य देखने नहीं देता, चाहे वह इतिहास, दर्शन, राजनीति हो या अन्य समस्याएँ। सेक्यूलर समझी जाने वाली अनेक धारणाएँ वास्तव में पूर्णतः निराधार हैं। जैसे, यही कि 'सभी धर्मों में एक जैसी बातें हैं' या 'कोई धर्म हिंसा की सीख नहीं देता'। इसे बड़ी सुन्दर प्रस्थापना मानकर अंधविश्वास की तरह दशकों से प्रचारित किया गया। मगर क्या किसी ने कभी आकलन किया कि इस से लाभ हुआ है या हानि? सच्चाई से विचार करें तो विश्वविजय की नीति रखने वाले, संगठित धर्मांतरणकारी सामी (Semitic) मजहबों को सनातन हिन्दू धर्म के बराबर कह कर भारत को पिछले सौ साल से निरन्तर विखण्डन के लिए खुला छोड़ दिया गया है।

कानून के समक्ष और सामाजिक व्यवहार में विभिन्न धर्मावलम्बियों की समानता एक बात है। किन्तु विचार-दर्शन के क्षेत्र में ईसाइयत, इस्लाम, हिन्दुत्व आदि को समान बताना खतरे से खाली नहीं। इस से अनजाने ही भारतीय ईसाइयों को अपने देश की संस्कृति, नियम, कानून आदि की उपेक्षा कर, यहाँ तक कि घात करके भी, दूर देश के पोप के आदेशों पर चलने के लिए छोड़ दिया जाता है। इसी तरह, भारतीय मुसलमानों को भी दुनिया पर इस्लामी राज का सपना देखने वाले इस्लामियों के हवाले कर दिया जाता है। केवल समय और परिस्थिति की बात रहती है कि कब कोई प्रभावशाली मौलाना दुनिया के मुसलमानों का आह्वान करता है, जिस में भारतीय मुस्लिम भी स्वतः सम्बोधित होंगे।

यदि सभी धर्मों में एक ही बातें हैं, तो जब कोई आलिम (अयातुल्ला, इमाम, मुफ्ती आदि) ऐसी अपील करे, जो मुसलमानों को हिंसक या देश-द्रोही काम के लिए प्रेरित करता हो, तब आप क्या कहकर अपने दीनी मुसलमान को उस का आदेश मानने से रोकेंगे? क्या यह कहकर कि फलाँ मौलाना या फलाँ अयातुल्ला सच्चा मुसलमान नहीं है? यह कौन मानेगा, और क्यों मानेगा? जब इस मौलाना या उस अयातुल्ला को इस्लाम का अधिकारी टीकाकार, निर्देशक, प्रवक्ता माना जाता रहा तो उसी के किसी आह्वान विशेष को यकायक गैर-इस्लामी कहना कितना प्रभावी होगा, इस पर ठण्डे दिमाग से सोचना चाहिए।

अतः सच यह है कि सभी धर्मों में 'समान' नीति-दर्शन बिलकुल नहीं है। इस पर बल देना जरूरी है। पूरी मानवता को आदर का अधिकारी कहते हुए यथोचित् उल्लेख करना ही होगा कि कौन मजहब किस बिन्दु पर, विवेक और मानवीयता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। तभी सम्भव होगा कि किसी कार्डिनल, मौलाना या रब्बी को (ईसाइयत, इस्लाम, यहूदी आदि) विशेष धर्म-दर्शन का विद्वान् मान कर भी उस के अनुयायी उस के सभी आह्वान मानना आवश्यक न समझें। बल्कि अनुचित बातों का खुला विरोध करें। तभी विवेकशील मुसलमान विश्व-इस्लाम के नाम पर देशद्रोह, काफिरों की हत्या, उन्हें धर्मांतरित करने, जैसे आदेशों को खारिज करेंगे। किन्तु यह तब होगा जब वे इस भ्रम से मुक्त हों कि इस्लाम ही एक मात्र सच्चा मजहब है। उन्हें यह समझाना ही होगा कि चाहे वह मुसलमान हैं, किन्तु पूरी दुनिया को इस्लामी बनाने की बात में अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति हिकारत व हिंसा है, जो विवेक-विरुद्ध और मानवता की दृष्टि से अनुचित है। यदि यह कहने से हिन्दू भाई कतराते हैं, तो निश्चय ही वह अपने और अपनी संततियों

को भी मुसीबत में फँसा रहे हैं।

जब इस्लाम के आदेशों में मानवीय विवेक की दृष्टि से, किसी जड़सूत्र से नहीं उचित और अनुचित तत्वों के प्रति मुसलमानों को चेतनशील बनाया जाएगा, तभी वे किसी मौलाना की बात को अपनी विवेक-बुद्धि पर कसकर मानने या छोड़ने की सार्वजनिक नीति बनाएँगे। इस आवश्यक वैचारिक संघर्ष से कतराने से केवल यह होगा कि मुस्लिम आबादी स्थाई रूप से देशी-विदेशी उलेमा की बंधक रहेगी। जब चाहे कोई कट्टरपन्थी मौलाना मुसलमानों को यहाँ-वहाँ हिंसक कार्रवाई के लिए भड़काएगा। तब मुसलमानों के पास उस की बात को सक्रिय-निष्क्रिय रूप से मानने, अन्यथा खुद को दोषी समझने के बीच कोई विकल्प नहीं रहता। इस से अन्तर नहीं पड़ता कि कितने मुसलमान वैसा आह्वान मानते हैं। किसी समाज, यहाँ तक कि पूरी दुनिया पर कहर बरपाने के लिए मुट्ठी भर अंधविश्वासी काफी हैं। न्यूयार्क या गोधरा का उदाहरण सामने है। वैसे आह्वान में भाग न लेने वाले मुसलमान भी दुविधा में रहेंगे। अंततः परिणाम वही होगा, जो १९४७ में हुआ था। मुट्ठी भर इस्लामपन्थी पूरे समुदाय को जैसे न तैसे अपने पीछे खींच ले जाएँगे। यह दुनिया भर का अनुभव है। सदाशयी मुसलमान कट्टर इस्लामी नेताओं की काट करने में सदैव अक्षम रहते हैं।

इसलिए भी जब तक 'सभी धर्मों में एक ही चीज है' का झूठा प्रचार रहेगा और मुस्लिम आबादी उलेमा के खाते में मानी जाएगी, सभी मुसलमान नैतिक रूप से उलेमा की बात मानना ठीक समझेंगे। न मानने पर धर्मसंकट महसूस करेंगे। उन के लिए यह संकट सुसुप्त अवस्था में सदैव रहेगा। केवल समय की बात होगी कि कब वह इसमें फंसते हैं।

यदि आप किसी मौलाना को नीति-विचार-दर्शन का उतना ही अधिकारी प्रवक्ता मानते हों, जितना हिन्दू शास्त्रों का कोई पण्डित, तब उस मौलाना के आह्वानों से अपने मुस्लिमों को आप जब चाहे नहीं बचा सकते। इस के लिए निरन्तर, अनम्य वैचारिक संघर्ष जरूरी है, जिस में इस्लाम की कमियाँ दिखाने में संकोच नहीं करना होगा। इस पर बल देना होगा कि मुसलमान जनता और इस्लाम एक चीज नहीं। कहना होगा कि विचार-विमर्श में इस्लाम समेत किसी भी विचारधारा या सिद्धान्त की समुचित आलोचना करने का अधिकार प्रत्येक मनुष्य को है। इस पर नहीं डटने के कारण ही (सेक्यूलरिज्म के नाम पर) भारत को इस्लामी और चर्च-मिशनरी आक्रामकों के लिए खुला छोड़ दिया गया है।

इसीलिए विदेशी इस्लामी उलेमा आक्रान्ता भी भारतीय मुसलमानों को अपनी थाती समझते हैं। जब भी ऐसे लोग कोई हिंसक आह्वान करते हैं, जो वे करते ही रहते हैं, हम अपने ही फूहड़ सेक्यूलर तर्क के अधीन बेबस होकर रह जाते हैं। क्योंकि हमने सेक्यूलरिज्म के प्रभाव में इस्लामी विचारधारा की कुछ भी आलोचना को गलत मान लिया है। मानो इस्लामी विचार और राजनीति के बारे में विचारने या भूल दिखाने का दूसरे को अधिकार नहीं। यह अनुचित और आत्मघाती दृष्टि है।

एक ओर उलेमा पूरी दुनिया की एक-एक चीज का 'इस्लामी' मूल्यांकन ही नहीं रखते, उसे उसी तरह चलाने के लिए दबाव डालते रहते हैं। यूरोपीय देशों में भी जहाँ मुट्ठी भर मुसलमान हैं, वह भी अरब, अफ्रीका, एशिया से गए प्रवासी, वहाँ भी इस्लाम के मुताबिक यह करने, वह न करने की माँग अधिकारपूर्वक की जाती है। जबकि इस्लामी देशों में अन्य धर्मावलम्बी की कौन कहे, उलेमा के सिवा आम मुसलमान को भी रीति-नीति में किसी परिवर्तन की बात करने का अधिकार नहीं। क्या यह साम्राज्यवादी, तानाशाही नजरिया सभी धर्मों में है?

- डॉ. शंकर शरण

(लेखक की पुस्तक 'धर्म बनाम मजहब' से एक अंश)

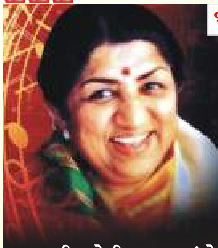

भारत रत्न लता दीदी दुनिया से अलविदा

भारत रत्न लता दीदी इस असार संसार से विदा ले चुकी हैं। उनकी मखमली आवाज कानों से गुजर कर सीधे हृदय को स्पर्श करने में समर्थ रही है। युगों-युगों तक उनकी आवाज उनकी पहचान बन कर उनका स्मरण कराती रहेगी। क्या संयोग है कि उनके द्वारा गाय गए अमर गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' को जहाँ इस वर्ष बीटिंग रिट्रीट में सम्मिलित किया गया, वहीं इस गीत के लेखक कविवर प्रदीप के जन्मदिन के अवसर पर ही लता दीदी ने इस नश्वर संसार को छोड़ दिया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनके चाहने वाले लाखों-करोड़ों व्यक्तियों को इस वियोगजन्य दुःख को सहने की क्षमता प्रदान करें और लता दीदी को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- न्यास परिवार

चापलूसी नहीं आराध्य के गुणों को आत्मसात करने में ही आराधना की पराकाष्ठा

हर अवस्था में कुछ नया सीखते रहने का प्रयास व्यक्ति को न केवल जड़ता से बचाता है अपितु इससे व्यक्ति की सही क्षमता का मूल्यांकन भी होता रहता है। इसी से मैं भी आजकल एक नई भाषा सीखने के लिए नियमित रूप से विश्वविद्यालय जाता हूँ। कुछ दिन हुए कक्षा में एक विद्यार्थी ने कुछ ऐसी बात कर दी जिसने सोचने पर विवश कर दिया। ये विद्यार्थी प्रायः देर से कक्षा में आता है और सप्ताह में औसतन एक बार से भी कम ही आता है। उसने एक दिन एक शिक्षक से कहा- 'सर आज आप बहुत फ्रैश-फ्रैश लग रहे हो। कपड़े भी आप रोज नए और बढ़िया पहन कर आते हो। आपको देखकर बहुत अच्छा फील होता है।' शिक्षक ने तो कुछ नहीं कहा पर मैंने हल्के-फुल्के अन्दाज में उससे कहा- 'भाई एक बात याद रखना परीक्षा में मूल्यांकन केवल उसी का होगा जो पेपर में लिखोगे। अंक

उसी के मिल पाएँगे जो सही लिखा होगा।'

हल्के-फुल्के अन्दाज अथवा मजाक में कही गई बात ने उस पर कितना प्रभाव डाला और कैसा प्रभाव डाला पता नहीं लेकिन इस कथन के बाद मेरा ध्यान कहीं और चला गया। आज धर्म-अध्यात्म के नाम पर भी तो अधिकांश यही हो रहा है। हम भक्ति अथवा पूजा-पाठ में भी अपने आराध्य का गुणगान करते हैं। क्या उस गुणगान का कोई औचित्य है? कुछ लोग चापलूसी की तरह अपने आराध्य का गुणगान करते हैं। क्या चापलूसी की हद तक ये गुणगान किया जाना चाहिए? क्या सीखने अथवा परीक्षा पास करने के लिए शिक्षक की प्रशंसा अथवा चापलूसी ही करना अनिवार्य है? परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए सबसे अनिवार्य है सम्बन्धित विषय का ज्ञान और उसका सही प्रस्तुतिकरण। यदि हम किसी की चापलूसी करके उत्तीर्ण होना अथवा अच्छे अंक लेना चाहते हैं तो वो मात्र एक छल है। वो हमारे परीक्षा परिणाम को महत्त्वहीन बना देता है।

बिना पर्याप्त ज्ञान अथवा जानकारी के परीक्षा में उत्तीर्ण होने का अर्थ है हम बिना तैरना सीखे उस गहरे समुद्र में उतर रहे हैं जहाँ डूबने की पूरी-पूरी सम्भावना है। अपेक्षित जानकारी अथवा ज्ञान के बिना किसी परीक्षा को पास कर लेना जीवन में असफलता को आमंत्रित करना ही है। भक्ति, आराधना अथवा पूजा-पाठ में भी यही होता है। कई बार तो लगता है कि हम अपने आराध्य की उपासना नहीं उसकी चापलूसी कर रहे हैं। क्या ऐसी चापलूसी से हमारा उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा? यदि हम भक्ति, आराधना अथवा पूजा-पाठ के मूल तत्त्वों को जाने बिना किसी अदृश्य शक्ति का मात्र गुणगान अथवा चापलूसी में लगे रहते हैं तो वो न केवल निरर्थक व महत्त्वहीन होता है अपितु अज्ञान, अंधविश्वास व अहंकार को बढ़ाने वाला भी होता है। कई लोगों को तो इस बात का ही अहंकार हो जाता है कि वे घण्टों पूजा-पाठ करते हैं। जो चापलूसी अथवा अहंकार सिखलाए वो कैसी शिक्षा और कैसी भक्ति?

प्रशंसा बुरी बात नहीं अपितु अच्छी बात है। सद्गुणों की प्रशंसा अवश्य होनी चाहिए। हमेशा दूसरों के अवगुणों को कहने वाला ही नहीं किसी के गुणों की प्रशंसा न करने वाला व्यक्ति भी निकृष्ट होता है। लेकिन जब हम केवल अपने व्यक्तिगत लाभ अथवा किसी के फेवर के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं तो उसे केवल चापलूसी कहा जा सकता है। ईश्वर

की झूठी प्रशंसा भी उसकी चापलूसी ही है। जब हम उसे जानते ही नहीं तो उसका गुणगान करने का क्या औचित्य हो सकता है? यदि हम उसे जानते हैं तो ये भी जानना चाहिए कि उसके किन गुणों के कारण हम उसकी पूजा करते हैं और गुणों की पूजा करने का क्या अर्थ होता है। अव्यक्त अथवा निराकार के गुणों की पूजा का सीधा सा अर्थ है उन गुणों को स्वीकार कर उन्हें आत्मसात करना। उन्हें अपने जीवन में उतारना।

यदि हम किसी महापुरुष अथवा ईश्वर के गुणों की प्रशंसा तो करते हैं लेकिन उन्हें अपने जीवन में नहीं उतारते तो वो प्रशंसा, पूजा-पाठ अथवा भक्ति दिखावे और चापलूसी के अतिरिक्त और कुछ नहीं। यदि हम जीवन में अहिंसा का पालन नहीं करते तो गाँधीजी की प्रशंसा करना बेमानी होगा। यदि गाँधीजी की बात करें तो राम उनके जीवन में अभिन्न रूप से जुड़े हुए थे। मरते समय भी उनके मुख से हे राम शब्द ही निकला। राम उनके लिए हमेशा प्रेरणास्वरूप रहे। स्वतंत्र भारत की कल्पना भी उन्होंने राम-राज्य के रूप में ही की थी। इसी से स्पष्ट हो जाता है कि राम का उदात्त जीवन उनके लिए हमेशा प्रेरणास्वरूप रहा। राम के प्रति उनकी भक्ति अथवा आस्था काल्पनिक नहीं थी अपितु उन्होंने राम के गुणों को आत्मसात करने में कोई कसर नहीं रखी थी। इसी ने उन्हें एक वास्तविक वैष्णव जन बनाया।

राम का चरित्र अत्यन्त उदात्त, प्रेरक, आकर्षक व अनुकरणीय है। राम सबके आदर्श हैं क्योंकि राम एक आदर्श पुत्र, एक आदर्श भाई, एक आदर्श पति व एक आदर्श राजा थे। वनवास के दौरान राम अपने हाथों से निर्मित पर्णकुटी में आनन्दपूर्वक निवास करते थे। उनकी आवश्यकताएँ सीमित थीं। अपनी अपरिग्रह वृत्ति के कारण राम संतुष्ट व सुखी थे। अपनी परिग्रह वृत्ति के कारण आज हम अनेकानेक समस्याओं से ग्रसित होकर कुंठित व असंतुष्ट जीवन व्यतीत करने को अभिशप्त हैं। राम की पूजा का अर्थ है राम के इन गुणों को अपनाना। यदि ऐसा नहीं होता है तो राम की पूजा मात्र आडम्बर है। सद्गुणों की प्रशंसा होनी चाहिए लेकिन सद्गुणों की प्रशंसा मात्र से हमारा आध्यात्मिक अथवा नैतिक विकास सम्भव नहीं। सद्गुण हमारे आचरण में आने चाहिए और यह तभी सम्भव है जब हम अपने आराध्य अथवा रोल मॉडल के सद्गुणों की प्रशंसा के साथ-साथ उन्हें अपने जीवन का अंग बना लें। उन्हें अपने व्यवहार में उतार लें। हमारे मन में विकारों की समाप्ति के साथ-साथ उनके स्थान पर अच्छे विचार-बीज

अंकुरित होने लगें।

जिस प्रकार से किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए उससे सम्बन्धित पाठ्यक्रम को अच्छी तरह से समझ कर याद कर लेना अनिवार्य है उसी प्रकार से वास्तविक आराधना के लिए आराध्य के गुणों को स्वयं में स्थापित कर लेना अनिवार्य है। इसके अभाव में किसी भी प्रकार की आराधना अथवा भक्ति मात्र आडम्बर, दिखावा अथवा स्वयं को दूसरे व्यक्तियों से श्रेष्ठ दिखलाने का भ्रम मात्र है। चापलूसी करना ही नहीं चापलूसी करवाना भी एक बहुत बड़ा दुर्गुण माना जाता है। वास्तव में कोई भी ईश्वर चापलूसी करवाने वाला हो ही नहीं सकता। जैसे एक शिक्षक यदि चापलूसी करने मात्र से किसी को अच्छे या अपेक्षाकृत अधिक अंक दे देता है तो वो अच्छा शिक्षक नहीं कहा जा सकता उसी प्रकार से यदि कोई ईश्वर अपनी चापलूसी करवा कर प्रसन्न होता है तो ऐसे ईश्वर के तथाकथित गुणगान करने वालों से एक नास्तिक कहीं अधिक अच्छा है क्योंकि बिना अनुभव अथवा उचित प्रमाण के ही वो उसे स्वीकार नहीं करता।

- सीताराम गुप्ता,
ए. डी. १०६-सी, पीतम पुरा
दिल्ली- ११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३

रामायण महाकाव्य में सीता अग्निपरीक्षा एक विवादित प्रसंग के रूप में जाना जाता है। इस प्रसंग के अनुसार राम द्वारा रावण को युद्ध में हराने के पश्चात् लंका में सीता को स्वीकार करने से पहले सीता की अग्निपरीक्षा ली। अग्नि में प्रवेश करने के पश्चात् भी सीता का शरीर भस्म नहीं हुआ। इससे सीता की पवित्रता सिद्ध हुई और श्री राम द्वारा सीता को पवित्र जानकार स्वीकार कर लिया गया। सीता की अग्निपरीक्षा के प्रसंग को लेकर अनेक लोगों के विभिन्न-विभिन्न मत हैं। महिला अधिकारों के नाम पर दुकानदारी करने वाले इसे नारी जाति पर अत्याचार, शोषण, नारी के अपमान के रूप में देखते हैं। विधर्मी मत वाले इस प्रसंग के आधार पर हिन्दू धर्म को नारी शोषक के रूप में

रामायण में सीता की अग्निपरीक्षा

चित्रित करते हैं जिससे धर्मान्तरण को समर्थन मिले। अम्बेडकरवादी इसे मनुवाद, ब्राह्मणवाद के प्रतीक के रूप में उछालकर अपनी भड़ास निकालते हैं। जबकि हमारे कुछ भाई इसका श्री राम की महिमा और चमत्कार के रूप में गुणगान करते हैं। क्योंकि उनके लिए श्री रामचन्द्र जी भगवान के अवतार हैं और भगवान के लिए कुछ भी सम्भव है। इस लेख में सीता की अग्निपरीक्षा को तर्क की कसौटी पर पक्षपात रहित होकर परीक्षा करने पर ही हम अंतिम निष्कर्ष निकालेंगे।

१. वाल्मीकि रामायण के श्री रामचन्द्र महान् व्यक्तित्व, मर्यादा पुरुषोत्तम, ज्ञानी, वीर, महामानव, ज्येष्ठ-श्रेष्ठ आत्मा, परमात्मा के परम भक्त, धीर-वीर पुरुष, विजय के पश्चात् भी विनम्रता आदि गुणों से विभूषित, महानायक, सद्गृहस्थ तथा आदर्श महापुरुष थे। ऐसे महान् व्यक्तित्व के महान् गुणों के समक्ष सीता की अग्निपरीक्षा कर पवित्रता को निर्धारित करना एक बलात् थोपी गई, आरोपित, मिथ्या एवं अस्वीकार्य घटना प्रतीत होती है। श्री राम के महान् व्यक्तित्व एवं आदर्श विचारों के समक्ष यह प्रसंग अत्यन्त तुच्छ है। इससे सिद्ध हुआ कि यह प्रसंग बेमेल है।

२. वैदिक काल में नारी जाति का स्थान समाज में मध्य काल के समान निकृष्ट नहीं था। वैदिक काल में नारी वेदों की ऋषिकाओं से लेकर गार्गी, मैत्रयी के समान महान् विदुषी थी, कैकयी के समान महान् क्षत्राणी थी, जो राजा दशरथ के साथ युद्ध में पराक्रम दिखाती थी, कौशल्या के समान दैनिक अग्निहोत्री और वेदपाठी थी। सम्पूर्ण रामायण इस तथ्य को सिद्ध करती है कि रावण की अशोक वाटिका में बन्दी सीता से रावण शक्तिशाली और समर्थ होते हुए भी सीता की इच्छा के विरुद्ध उसके निकट तक जाने का साहस न कर सका। यह उस काल की सामाजिक मर्यादा एवं नारी जाति की पत्नीव्रता शक्ति का उद्बोधक है। रामायण काल में सामाजिक मर्यादा का एक अन्य उदहारण इस तथ्य से भी मिलता है कि परनारी को अपहरण करने वाला रावण और परपुरुष की इच्छा करने वाली शूर्पनखा को उनके दुराचार के कारण राक्षस कहा गया जबकि सभी प्रलोभनों से विरक्त एवं एक पत्नीव्रती श्री राम और शूर्पणखा के व्यभिचारी प्रस्ताव को ठुकराने वाले लक्ष्मण जी को देवतुल्य कहा गया है। ऐसे

महान् समाज में विदुषी एवं तपस्वी सीता का सत्य वचन ही उसकी पवित्रता को सिद्ध करने के लिए पूर्ण था। इस आधार पर भी सीता की अग्निपरीक्षा एक मनगढ़त प्रसंग सिद्ध होता है।

३. वैज्ञानिक दृष्टि से भी सोचें तो यह सम्भव ही नहीं है कि किसी मनुष्य के शरीर को अग्नि के सुपुर्द किया जाये और वह बिना जले सकुशल बच जाये। क्या अग्नि किसी की पवित्रता की परीक्षा लेने में सक्षम है? वैज्ञानिक तर्क के विरुद्ध सीता अग्निपरीक्षा को चमत्कार की संज्ञा देना, मन बहलाने के समान है। केवल आस्था, विश्वास और श्रद्धा रूपी मान्यता से संसार नहीं चलता। किसी भी मान्यता को सत्य एवं ज्ञान से सिद्ध होने पर ही ग्रहण करने योग्य मानना चाहिए। इस आधार पर भी सीता की अग्निपरीक्षा एक मनगढ़त प्रसंग सिद्ध होता है।

४. सुग्रीव की पत्नी रूमा जिसे बाली ने अपना बन्धक बना कर अपने महलों में रखा हुआ था को बाली वध के पश्चात् जब सुग्रीव स्वीकार कर सकता है, तो श्री राम हरण की हुई सीता को क्यों स्वीकार नहीं करते? श्री राम को आदर्श मानने वाले इस तर्क का कोई तोड़ नहीं खोज सकते।

५. इसी पुस्तक में रामायण के प्रक्षिप्त (मिलावट) होने (विशेष रूप से उत्तर काण्ड) का वर्णन अन्य लेख में किया गया है। उस आधार पर सीता की अग्निपरीक्षा का प्रसंग प्रक्षिप्त होने के कारण अस्वीकार्य है। रामायण की महान् गाथा तो युद्ध के पश्चात् हनुमान द्वारा राम विजय की सीता को सूचना देने के लिए अशोक वाटिका जाने, श्री राम और सीता के पुनर्मिलन और अयोध्या वापिस लौट जाने के साथ समाप्त हो जाती है। रामायण में मिलावट कर श्री राम के आदर्श चरित्र को दूषित करने एवं सीता की अग्निपरीक्षा को व्यर्थ आरोपित करने का कार्य मध्यकाल की देन है। इस आधार पर भी सीता की अग्निपरीक्षा एक मनगढ़त प्रसंग सिद्ध होता है।

रामायण नारी जाति के सम्मान की शौर्य गाथा भी है। यह सन्देश देती है कि अगर एक अत्याचारी परनारी का हरण करता है तो चाहे सागर के ऊपर पुल भी बनाना पड़े, चाहे वर्षों तक जंगलों में भटकना पड़े, चाहे अपनी शक्ति कितनी भी सीमित क्यों न हो। मगर दृढ़ निश्चयी एवं सत्यमार्ग के पथिक नारी जाति के तिरस्कार का, अपमान का प्रतिशोध प्राण हरण कर ही लेते हैं। ऐसी महान् गाथा में सीता की अग्निपरीक्षा जैसा अनमेल, अप्रासंगिक वर्णन प्रक्षिप्त या मिलावटी होने के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

– डॉ. विवेक आर्य
शिशु रोग विशेषज्ञ

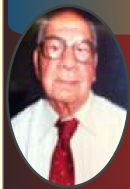

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ब्लेम-गेम का जमाना है यह

शराफत, ईमानदारी, परहित भावना, कर्त्तव्यपरायणता, कठिन परिश्रम, दूसरों के अच्छे कार्यों की प्रशंसा करना तथा निन्दा, चुगली तथा बुराई से बचना बीते जमाने की बातें हो गई हैं। आजकल जहाँ तक हो सके लोग कामचोर, दूसरों की निन्दा करने वाले तथा दूसरों के अच्छे, बुरे कार्यों में दोष निकाल कर उनकी कब्र खोदने वाले होते जा रहे हैं। अधिकांश लोगों की प्रवृत्ति 'ब्लेम-गेम' की ही होती है। किसी काम के शुरू होने से पहले ही उसके असफल होने तथा उसके भयंकर दुष्प्रभावों के प्रति चेतावनी देना शुरु कर देते हैं। प्रत्येक देश की राजनीति में एक सत्ता पक्ष तथा कुछ विपक्षी दल होते हैं। कहा जाता है कि the function of opposition is to oppose अर्थात् विरोधी दल का तो काम ही विरोध करना होता है। हमारे देश के विरोधी दलों का केस ही बिलकुल अजीब है। हमारे विरोधी का तो काम ही सरकार की हर नीति का विरोध करना होता है। चाहे सरकार कितना ही अच्छा बजट बनाये, कितनी भी जनहित की बढ़िया योजनाएँ बनाए, सुरक्षा व्यवस्था में सुधार करे, संघीय ढाँचे के तहत केन्द्र राज्यों की कितनी भी सहायता करे विरोधी पक्ष तो सत्तापक्ष का विरोध ही करेंगे। भ्रष्टाचार, गरीबी, बेकारी, कीमतों में कमर तोड़ वृद्धि, कानून तथा व्यवस्था में बिगाड़ आदि सबके लिए सत्तापक्ष तथा विपक्ष एक दूसरे को ही दोषी मानते हैं। जब कभी संसद/विधानसभा का अधिवेशन होता है, आमतौर पर कार्रवाई इसलिए सुचारू ढंग से नहीं चल पाती क्योंकि 'ब्लेम-गेम' के तहत सत्तापक्ष तथा विपक्ष एक दूसरे के दोष निकालकर केवल अपने को ही सच्चाई, जनकल्याण तथा देशहित का चैम्पियन साबित करना चाहते हैं। देखा जाये तो आजकल 'ब्लेम-गेम' की ही प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। कमाल की बात तो यह है कि देश की बढ़ती जनसंख्या के लिए भी सरकार तथा विरोधी दल एक दूसरे को जिम्मेदार ठहराते हैं। 'ब्लेम-गेम' के बलबूते पर ही तो यू.पी.ए. की मनमोहन सिंह सरकार की कमियों को जग जाहिर कर मोदी सरकार ने केन्द्र में सत्ता पर कब्जा किया।

'ब्लेम-गेम' की प्रवृत्ति राजनीति में ही नहीं बल्कि हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हावी होती जा रही है। जब कभी भी सरकारी इमारतें, पुल तथा सड़कें बनती हैं उद्घाटन होने से पहले ही टूट जाती है और टूटें भी क्यों नहीं। इन्हें बनाने वाले ठेकेदार से लेकर क्लर्क, हैड क्लर्क, एकाउण्टेंण्ट, एस.डी.ओ., एक्स.ई.एन., मंत्री तक सबके हिस्से फिक्सड होते हैं। सरकार चाहे जिस भी पार्टी की आये, क्योंकि व्यवस्था तो यथावत् जारी है। अतः सरकारी इमारतों, पुल तथा सड़क बनाने में घटिया मैटीरियल लगता रहेगा। इनके टूटने पर सब एक दूसरे पर ब्लेम लगाते हैं। पहले तो कोई पकड़ा नहीं जाता और अगर पकड़ा भी जाये तो रिश्वत ले-देकर मामला रफा-दफा हो जाता है।

हमारे घरों की भी स्थिति किसी तरह भिन्न नहीं। 'ब्लेम-गेम' वहाँ भी शान से हुकूमत करता है। आमतौर पर आज के बच्चे बिगड़ैल, बहुत ही बदतमीज, गुस्सैल, अंहकारी, बड़ों की अवज्ञा करने वाले, गाली-गलौच तथा मारपीट करने वाले होते हैं। घर में माता-पिता, दादा-दादी इसके लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, कई बार गाज पड़ौसियों के बच्चों पर गिरती है। माँ-बाप स्कूल के गैर जिम्मेदार शिक्षकों को और शिक्षक बच्चों के माता-पिता द्वारा अच्छे संस्कार ना दिये जाने को जिम्मेदार ठहराते हैं। स्कूलों में अच्छे परीक्षाफल न आने पर भी ब्लेम सभी एक दूसरे पर लगाते हैं। टीम इण्डिया जब कभी भी किसी अन्य देश के साथ मैच खेलकर जीत जाती है तो सभी अपनी अपनी पीठ थपथपा रहे होते हैं लेकिन जब हमारी टीम अपने देश में या फिर विदेशी धरती पर बुरी तरह पिट जाती है तो 'ब्लेम-गेम' अपने पूरे यौवन पर होता है। गेंदबाज बल्लेबाजों को और बल्लेबाज गेंदबाजों को दोषी ठहराते हैं, टीम के कप्तान की व्यूह रचना पर भी प्रश्न चिह्न लगाते हैं, बख्शा कोच को भी नहीं जाता। इस तरह आजकल 'ब्लेम-गेम' का जमाना है। बुद्धिमान लोग दूसरों की खाट खड़ी करके दूसरों के दोष निकालकर ही समाचार पत्रों तथा मीडिया की सुर्खियों में जगह बनाते हैं और बेचारे काम करने वाले गुमनामी में खो जाते हैं। यह है 'ब्लेम-गेम' का कमाल।

- प्रो. शामलाल कौशल
मकान नं. ९७५ बी/२०, ग्रीन रोड, रोहतक (हरि.)

हम इस तथ्य को भूल गए कि वेद यदि ईश्वरीय ज्ञान है, तो उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ऐसा विज्ञान होगा, जो मनुष्य द्वारा खोजे गए किसी भी विज्ञान की अपेक्षा इतना गम्भीर होगा कि मनुष्यकृत विज्ञान उसकी समता कभी नहीं कर पाएगा और वह विज्ञान केवल आर्य समाजियों, हिन्दुओं अथवा इस पृथ्वीवासियों के लिए ही सीमित नहीं होगा, अपितु ब्रह्माण्ड में जहाँ-जहाँ भी मननशील प्राणी रहते हैं, उन सबके लिए उन सभी परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए समान रूप से हितकारी होगा। इस कारण वेदभाष्यों और इनके व्याख्यानरूप ब्राह्मण ग्रन्थों के भाष्य इस अनिवार्य तथ्य को ध्यान में रखकर ही होने चाहिए, जो आज नहीं है। ऋषि दयानन्द सरस्वती के भाष्य अति संक्षिप्त और सांकेतिक ही

वेद यदि ईश्वरीय ज्ञान है .....

हैं, उनमें भी संस्कृत भाष्य ही उनके हैं, हिन्दी वाले नहीं। कुछ व्यक्ति हठपूर्वक अथवा भोले-भाले आर्य समाजियों को यह दिखाने के लिए कि वे ही सच्चे ऋषि भक्त हैं, ऋषिकृत वेदभाष्य को ही पूर्ण एवं पर्याप्त मानते हैं परन्तु उनका आत्मा ऐसा स्वीकार नहीं करता है। इस कारण वे अपने पुत्र-पुत्रियों को पाश्चात्य शिक्षा ही पढ़ाते हैं। वेद की बात केवल मंच की शोभा है, वह परिवार के लिए थोड़े ही है। यह तो पौराणिकों का हनुमान् चालीसा हुआ, जो मन्दिर में हनुमान् चालीसा गा गाकर सूर्य को हनुमान् से निगलवाता है और विद्यालय अथवा घर में जाकर बच्चों को विज्ञान पढ़ाता हुआ सूर्य को पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा बताता है। यह आत्महनन का घोर पाप है, जो आज निःसंकोच हो रहा है। इसलिए मेरा सभी से अनुरोध है कि आप वेद को अब तक नहीं समझ पाए अथवा किसी विद्वान् ने नहीं समझा, तो हम नए सिरे से जीना और वेद को समझना सीखें।

मैंने सम्पूर्ण परिस्थिति को २०-२५ वर्ष पूर्व ही भाँप लिया था, तभी से वेद के यथार्थ वैज्ञानिक स्वरूप को समझने की तीव्र इच्छा थी। मेरा स्वभाव रहा है कि जिस तथ्य को मेरी बुद्धि स्वीकार न करे, उसे मैं दूसरों के सामने प्रस्तुत न करूँ। इस कारण आर्य समाज के तृतीय तथा प्रथम नियम को स्वीकार कर पाना ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के कुछ आश्वासन के अतिरिक्त किसी भी प्रकार का अन्य आर्य साहित्य मुझे सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा था। ईश्वर कृपा से मैंने इसको सिद्ध करने का भीष्म संकल्प लिया और आप सबके सहयोग से एवं ईश्वर कृपा से इसे पूर्ण भी कर लिया। आज ईश्वर की वैज्ञानिक सिद्धि उसको प्रत्येक क्षण कण-कण में अनुभूत करना, उसकी कार्यविधि को व्यापक एवं सूक्ष्म दृष्टि से समझना और किसी भी वैज्ञानिक बुद्धि वाले को समझाना, वेद की ईश्वरीयता और सर्वविज्ञानमयता को सिद्ध करना मेरी 'वैदिक रश्मि थ्योरी' के लिए अब साधारण बात है।

इस प्रकार आर्य समाज के प्रथम और तृतीय नियमों में मेरा स्थायी एवं सुदृढ़ विश्वास हुआ है। यदि मैं 'वेदविज्ञान-आलोकः' जैसा ग्रन्थ नहीं रच पाता, तो ऐसा करना मेरे लिए सम्भव नहीं हो पाता और मैं भी क्या होता, यह भी नहीं कह सकता। यद्यपि 'वेदविज्ञान-आलोकः' में मैंने ६५ वैदिक, आर्ष एवं अन्य संस्कृत ग्रन्थों के साथ-साथ

वर्तमान भौतिकी के उच्च स्तरीय २६ ग्रन्थों वा शोधपत्रों को उद्धृत किया है परन्तु **वैदिक और आर्ष ग्रन्थों को समझने की दिशा ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य से ही मिली है, जिसे मैंने सहस्रों स्थानों पर उद्धृत किया है।** 'वेदविज्ञान-आलोकः' एक ऐसा वैज्ञानिक ग्रन्थ है, जिसके समक्ष संसार का कोई भी वेद विरोधी वैज्ञानिक अपनी शेखी नहीं बघार सकता और न वेद की निन्दा करने का साहस कर सकता है। यह ग्रन्थ आधुनिक भौतिक विज्ञान को सर्वथा नई दिशा देने में समर्थ है और सृष्टि की सर्वथा नई वैदिक वैज्ञानिक (वस्तुतः पुरातन व सनातन) व्याख्या करता है। यह वर्तमान सैद्धान्तिक भौतिकी की अनेकों गम्भीर और उन अनसुलझी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है, जिन्हें सुलझाने में विश्व की बड़ी से बड़ी वैज्ञानिक संस्थाएँ अरबों-खरबों डालर खर्च करने के पश्चात् और पिछले एक शताब्दी का समय खर्च करने के पश्चात् भी असफल रही हैं। इस समय विश्व के सैद्धान्तिक भौतिक विज्ञान को एक ऐसी ऊँची और सुदृढ़ दीवार दिखाई देती है, जिसने उनके नवीन आविष्कारों का मार्ग ही बन्द कर रखा है।

ऐसी स्थिति में 'वेदविज्ञान-आलोक' उस बाधक विशाल दीवार को तोड़कर विज्ञान को आविष्कार के नए-नए क्षेत्र सुझाने में समर्थ है और उनको पूरा मार्गदर्शन देने में भी समर्थ है, परन्तु कार्य उनको ही करना है, क्योंकि उनके साथ ही विश्व की सभी राजसत्ताएँ, अर्थसत्ताएँ, संचारतन्त्र एवं मानव समाज है और मेरे साथ मुट्ठी भर आर्यजन और कुछ युवा वैज्ञानिक ऐसी सोच वाले युवा तथा कुछ पौराणिक वेदभक्त। मुझे खेद है कि बौद्धिक दासता के चलते न तो वह भारत सरकार, जिसे हम अपनी राष्ट्रभक्त व वैदिक संस्कृति की पोषक समझते थे और उसके अधिकारी हमारे कार्य को अभी तक समझ पाए, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपनी अज्ञानता व ईर्ष्यावश न समझ पाया और न समझ पाएगा। उसकी यह अज्ञानता एक दिन राष्ट्र के विनाश का कारण बनेगी परन्तु आज तो वह सत्ता के अहंकार में मस्त है। हिन्दू समाज का कोई स्तर ही नहीं रहा, यह तो फुसफुसिया जीव है, जिसे अपने हित-अहित का कुछ भी बोध नहीं और फिर आज हिन्दू है कौन? यहाँ तो परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने में तत्पर हजारों कथित जातियाँ भरी हैं, जो कुए के मेंढ़क की भाँति थोड़ी दूर का भी नहीं देख पा रहीं। तब इन्हें यह बोध तो कैसे होगा कि वे वास्तव में आर्यों के वंशज हैं। वैसे इनको दोष कैसे दूँ? जबकि मेरा सर्वाधिक निकटवर्ती परिवार अर्थात् आर्य समाज का संगठन, मेरे अपने साथी अर्थात् आर्य विद्वान्, भाषणों, जय-जयकारों और बड़े-बड़े मंचों पर माला की शान और तालियों की गड़गड़ाहट में स्वयं के अस्तित्व को समाप्त करती हुई आर्य सभाएँ मेरे इस कार्य को आज तक नहीं समझ सकी हैं? आर्य समाज को मैंने अपना सर्वाधिक निकटवर्ती इसी कारण कहा है कि यह अभी भी वेद का नाम अधिक लेता है, अन्यथा मैं तो सम्पूर्ण मानव जाति को ही एक परिवार मानता हूँ और किसी भी वेदभक्त व ईश्वरभक्त को ऐसा ही मानना चाहिए, अन्यथा उसको वेद व ईश्वर का कोई ज्ञान नहीं है।

आज एक समस्या यह भी आती है कि अनेक लोगों को हमारा विषय ही बहुत कठिन प्रतीत होता है, जो उनकी समझ में नहीं आता। इस कारण जो हमारे कार्य को पूर्णतः समझे बिना दान करते हैं, उसके लिए वे बहुत बधाई के पात्र हैं। वे वर्षों से दान कर रहे हैं, यह बड़े सुखद आश्चर्य की बात है, फिर भी मैं अपने सभी आर्य समाजियों एवं पौराणिकों से यह कहना चाहूँगा कि आप सबने वेद को अब तक सामान्य व्यवहार, कर्मकाण्ड एवं मनोरंजन का साधन माना, ऐसा मानते-मानते हजारों वर्ष बीत गए। ऋषि दयानन्द के जगाने पर भी डेढ़ सौ वर्षों से सो रहे हैं। यह सत्य है कि आर्य समाज एवं अन्य हिन्दू क्रान्तिकारियों ने अनेकों क्रान्तिकारी कार्य किए परन्तु वैदिक विज्ञान को जानने में तो सोते ही रहे न? सम्पूर्ण देश बौद्धिक दास बन गया, समाज छुपा हुआ नास्तिक एवं पाश्चात्य भक्त बन गया, हमारी सन्तान हमारे देखते-देखते मैकाले की पुजारी बन गई, सब ओर से हमारे ऊपर बौद्धिक आक्रमण

होते रहे और हो रहे हैं, हमारे देश के न्यायालयों व सरकारों ने भारत के वैदिक सांस्कृतिक मूल्यों को तार-तार करने वाले निर्णय लिए, राजनीति ने समाज को छिन्न-भिन्न किया, तब भी हमारी नींद नहीं खुली, इसे दुर्भाग्य नहीं कहें, तो और क्या कहें? वेदविज्ञान अगर आपकी समझ में नहीं आता है, तो यह दोष वेदविज्ञान अथवा मेरा नहीं है, बल्कि दोष भारत के भाग्य का है, जहाँ वैदिक विज्ञान ऐसा लुप्त हो गया कि मैं खोज कर लाया और देश को देने का प्रयास किया, तो उसे पहचानने वाले कम वा नगण्य हैं।

कोई-कोई उच्च पदासीन आर्य विद्वान् भी वेदों के व्याख्यान रूप ब्राह्मण ग्रन्थों को इतिहास का विषय बतला देते हैं, तो

कोई-कोई पौराणिक बन्धु वेद में भी इतिहास निकालने का प्रयास करते हैं। कोई नहीं सोचता कि यदि ब्राह्मण ग्रन्थों में मानव इतिहास है, तो वेद भी इतिहास का ग्रन्थ ही सिद्ध हुआ, तब क्या परमात्मा मानव इतिहास लिखेगा? कोई-कोई विद्वान् कह देते हैं कि विज्ञान हमारा विषय नहीं, तब सब सत्य विद्याओं अर्थात् विज्ञान का ग्रन्थ वेद कैसे आपका विषय हो गया? यदि वेद भी आपका विषय नहीं, तब कैसे कहें, ऐसे महानुभावों को वैदिक विद्वान्? हाँ, वे विद्वान् अवश्य हैं परन्तु अपने वेदेतर किसी ग्रन्थ के। ऐसे क्रूर काल में अविद्या के इस गाढ़े अन्धकार में कुछ सौभाग्यशाली महानुभाव, जिनके अन्दर वेदों, देवों एवं ऋषियों के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी, जिन्हें अपनी शिराओं में भगवान् राम और भगवान् कृष्ण जैसे महान् पूर्वजों का पवित्र रक्त बहता हुआ प्रतीत होगा, जिनके हृदय में माँ भारती और माँ मानवता को बचाने की गहरी तड़प होगी, जिन्हें राष्ट्रीय एवं आत्म स्वाभिमान के साथ जीने की प्रबल लालसा होगी, वे ही हमारे साथ बिना किसी की चिन्ता किए जुड़ते चले जायेंगे और हमें ऐसे व्यक्तियों को ही साथ लेने में ही आनन्द होगा । मित्रो! जिस मैकाले ने भारत को बौद्धिक दास बना दिया, उसके साथ सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य था अर्थात् विश्व की सर्वोच्च सत्ता उसके साथ थी और विश्व के सर्वोच्च संसाधन भी उसके साथ थे, और आज भी हैं। कथित स्वतन्त्रता के बाद से आज तक भारत की प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें भी उसके साथ रहीं। इस पर भी मैकाले व उसके दासों को भारत को बिगाड़ने में लगभग डेढ़ सौ वर्ष लग गए। उधर मैं एकाकी अब तक कुछ सहयोगियों के साथ और अपने कुछ शिष्यों के साथ मैकाले की अनिष्टकारी व्यवस्था को ध्वस्त करने का स्वप्न देख कर आगे बढ़ चला हूँ, जो मैकाले का भक्त है, वह हमारे साथ नहीं आयेगा और जो सच्चा वेद व राष्ट्रभक्त है, वह अवश्य आयेगा। मैकाले को संसार ने भरपूर साथ दिया और दे रहा है, हमें कौन-कौन साथ देंगे? यह समय ही बतायेगा। आर्य समाज, समस्त हिन्दू समाज, भारत एवं संसार को निर्णय करना है। हमारा मार्ग निश्चित है, जिसको हमारे साथ यात्रा करनी है, वह हमारे साथ आए, अन्यथा मूकदर्शक बने रहें। यद्यपि आप सबके साथ के बिना निश्चित ही हमारा स्वप्न पूरा नहीं होगा परन्तु हमें जीवन के अन्तिम समय में पश्चाताप तो नहीं होगा कि परमात्मा द्वारा बुद्धि दिये जाने के पश्चात् भी वेद, राष्ट्र एवं विश्व के लिए हमने कोई प्रयास नहीं किया, और हमें यह भी नहीं लगेगा कि जिन्होंने हमें इस कार्य के लिए अपना पवित्र धन दान में दिया, उस धन का हमने सदुपयोग नहीं किया। वैसे भी मनुष्य के हाथ में केवल कर्म है, फल तो ईश्वराधीन है, जैसा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'

हम इसी आदर्श को लेकर निरन्तर बढ़ते रहे हैं और बढ़ भी रहे हैं। स्वप्न पूर्ण हो वा नहीं परन्तु हमें और इस कार्य में सहयोग करने वालों की परमेश्वर की कृपा का प्रसाद अवश्य मिलेगा। आज महान् धर्मयुद्ध में हमने अपनी भूमिका निश्चित कर ली है, अब आपको अपनी भूमिका निश्चित करनी है।

- श्री वैदिक स्वस्ति पन्थान्यास, वेद विज्ञान मंदिर
ग्रा. पो.- भागल-भीम, वाया-भीनमाल
जिला- जालौर (राज.)- ३४३०२९

भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा७सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:।।

इस वेद मंत्र में उपदेश है कि मनुष्यों को ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि उनके शरीर के विभिन्न अवयव सुदृढ़ और अपने अपने कर्तव्य पालने में समर्थ हो और उनकी आयु संसार के हित में व्यय हो।

शरीर के अवयवों को सुदृढ़ तथा योग्य बनाने और उनको धर्मानुकूल प्रयुक्त करने का मुख्य साधन संस्कार हैं। संस्कारों से न केवल शरीर का ही विकास होता है किन्तु मानसिक वाचिक तथा आत्मिक उन्नति का भी एक मात्र साधन संस्कार ही है, इसीलिए आर्य जाति में संस्कारों को इतना महत्व दिया गया है। संस्कार शब्द '**सम**' उपसर्ग और '**कृ**' धातु से मिलकर बना है इसका अर्थ शुद्ध करना या उन्नत

चित्र नवलखा महल, उदयपुर स्थित संस्कार वीथिका का है।

संस्कार

करना है। आजकल संस्कारों से रस्मो रिवाज यानी रिचुअल्स का अर्थ लिया जाता है। रस्मो रिवाज से आजकल का सभ्य संसार तंग है इसलिए शिक्षित समुदाय संस्कारों को व्यर्थ पाखण्ड समझता है। मनुष्य जाति में संस्कार तो बहुत दिन से लुप्तप्राय हो गए हैं उनके केवल चिह्न शेष हैं यह चिह्न या तो अशिक्षित स्त्रियों के हाथ में हैं जो किसी न किसी प्रकार लकीर पीटती जाती हैं या उतने ही अशिक्षित या अर्धशिक्षित पुरोहित और पण्डितों के अधीन हैं जो इनको अपनी जीविका चलाने के लिए किए जा रहे हैं।

रस्मो रिवाज इतना घृणित शब्द नहीं है जितना समझा जाता है। यदि रस्मो रिवाज के इतिहास की विवेचना की जाए तो ज्ञात होगा कि रस्मो रिवाज का आरम्भ में एक विशेष लक्ष्य था जिस प्रकार प्रत्येक कार्य का हुआ करता है। कल्पना कीजिए कि आप को दुर्गम वन पार करके किसी नियत स्थान पर पहुँचना है। वन में कोई मार्ग दिखाई नहीं पड़ता आप अपनी बुद्धि या विद्या या विद्वानों के परामर्श से निश्चित दिशा में चल कर उस स्थान पर पहुँचते हैं। इसको आप साधारण कार्य कहेंगे। आपके पैरों के चिह्न भूमि पर पड़ेंगे तो सही परन्तु स्पष्ट ना होंगे। यदि उसी मार्ग पर आपने अपने चिह्न बना दिए और आप या आपके अनुयाई पुनः पुनः उसी मार्ग पर चलकर उस स्थान तक पहुँचते रहे तो यह सड़क बन जाएगी और भावी सन्तान को सुविधा हो जाएगी। जो सम्बन्ध आरम्भिक मार्ग और इस सड़क में है वही सम्बन्ध व्यक्तिगत कार्यों और रस्मो रिवाज में है। '**महाजनों येन गत: स पन्था**' बड़े मनुष्य जिस मार्ग से चलते हैं वहीं सड़क कहलाती है। ऋषि-मुनियों ने वेद तथा तपोबल से कर्तव्य पालन और मुक्ति प्राप्ति का एक कार्यक्रम निश्चित किया, लोगों ने उनका अनुकरण किया और धीरे-धीरे इस कार्यक्रम का नाम ही रस्मो रिवाज हो गया। वर्तमान शिक्षित समाज भी रस्मो रिवाज के फंदे से छुटकारा नहीं पा सकता। यह हो सकता है कि एक प्रकार के रस्मो रिवाज को छोड़कर दूसरे प्रकार के रस्मो रिवाज को ग्रहण कर ले। जिधर आँख उठाइए उसी ओर रस्मो रिवाज का आधिपत्य मिलेगा।

उदाहरण के लिए सबसे अधिक आवश्यक सबसे अधिक कार्य संलग्न सेना विभाग को लीजिए। सेना में जीवन और मृत्यु का प्रश्न प्रतिक्षण प्रस्तुत रहता है। वहाँ किसी ऐसे कार्य करने का समय नहीं मिलता जो व्यर्थ या केवल मनोरंजन का

साधन हो। परन्तु वहाँ रस्मो रिवाज का इतना अधिकार है कि पैर उठाने, हाथ हिलाने, ऊपर देखने, नीचे को आँख करने, सिर को मोड़ने, पीठ को फेरने आदि प्रत्येक छोटे से छोटे कार्य के लिए भी एक शब्द नियत है। और व्यक्तियों को कुछ भी स्वतंत्रता नहीं दी जाती। सैनिकों के भिन्न-भिन्न कृत्यों की यज्ञ सम्बन्धी विभिन्न क्रियाओं से और आर्डर यानी आज्ञाओं की मंत्रों से तुलना की जा सकती है। राजकीय दरबारों, न्यायालयों, विश्वविद्यालयों की कन्वोकेशन सभाओं में आप इस प्रकार के रस्मो रिवाज का आधिपत्य पाएँगे।

यह रस्मो रिवाज आजकल के सभ्य और शिक्षक समुदाय ने बनाए हैं। और कोई उनको घृणा की दृष्टि से नहीं देख सकता। फिर समझ में नहीं आता कि शिक्षित समाज का आज से प्राचीन रस्मो रिवाज की ओर ऐसी उदासीनता या उपेक्षा क्यों है? लोग पूछते हैं की यज्ञ में यजमान पूर्व की ही ओर मुँह क्यों करें, विवाह में वधू और वर सात ही पग क्यों चलें? जातकर्म में सोने की ही श्लाका क्यों हो? समावर्त्तन में अमुक मंत्र ही क्यों पढ़ा जाए? अमुक कृत्य में आठ ही आहुतियाँ क्यों दी जाएँ? परन्तु इसी प्रकार के महाशयों से पूछा जा सकता है कि राज दरबार में जाते समय इतनी ही दूर से क्यों अभिवादन किया जाए? सिर को इतना ही इन्च क्यों झुकाया जाए? राज दरबार के वस्त्र अमुक प्रकार के ही क्यों हैं? यूनिवर्सिटी के कन्वोकेशन की गाउन निश्चित प्रकार की क्यों हो? हाईकोर्ट के जजों की टोपी नियत नीति की क्यों हो? तो उसका इसके अतिरिक्त और क्या उत्तर हो सकता है कि यह कल्पित नियम सभा या समाज को पूर्णरूपेण संगठित करने के लिए हैं। सादृश्य तथा एक्य ही संगठन का बाह्य साधन है। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कार भी जिनको रस्मोरिवाज कहा जाता है समाज को संगठित करते हैं और इसलिए आवश्यक हैं। कुछ लोग कहते हैं कि सेना, दरबार तथा यूनिवर्सिटी आदि के रस्मोरिवाज प्रभावशाली और प्रशंसनीय प्रतीत होते हैं, परन्तु संस्कारों के नियम ऊल जलूल, अनावश्यक और वर्त्तमान काल के सर्वथा प्रतिकूल होने से हास्य जनक हैं।

जैसे स्नातक होने से पूर्व सिर मुण्डाना कैसा भद्दा लगता है। परन्तु ऐसे पुरुषों ने यह नहीं विचारा कि हमारे संस्कारों में कितना आवश्यक और महत्वपूर्ण भाग है और वह मनुष्य की शारीरिक तथा आत्मिक उन्नति का कहाँ तक साधक है।

उन्होंने गौरवशालिता तथा भद्देपन के भी कल्पित अर्थ ले लिए हैं इसीलिए उनको प्रभावशाली वस्तुएँ भी केवल इसलिए भद्दी लगती हैं कि विदेशी लोग उनको भद्दा समझते हैं। उदाहरण के लिए सिर पर शिखा होना कोई भद्दापन नहीं है परन्तु भारतीय नवशिक्षितों ने देखा कि यूरोप के लोग पूर्वी देशों के शिखाधारियों को Pigtailed या शूकर पुच्छी कहते हैं तो उन्होंने भी शिखा जैसे धर्मचिह्न को तिलाञ्जलि दे दी।

यह केवल विदेशीय आदर्शों के अनुकरणों का फल है कि नव शिक्षित पुरुष चोटी को तो भद्दा समझें परन्तु मुसलमानों की टर्की टोपी की ऊपर की शिखा को सुन्दर कहें। प्रायः नवयुवक पूछते हैं कि शिखा क्यों रखी जाए? परन्तु कोई यह नहीं पूछता कि एलबर्ट फैशन के बाल क्यों रखने चाहिए।

यद्यपि संस्कारों को आजकल रस्मो रिवाज कहते हैं और हमारी दृष्टि में रस्मो रिवाज भी समाज संगठन के लिए बड़े आवश्यक हैं तथापि यह नहीं समझना चाहिए कि रस्मो रिवाज ही संस्कार हैं हमारे विचार में रस्मो रिवाज तो संस्कारों के बाह्य चिह्न हैं। संस्कारों में आन्तरिक गौरव भी है। चावल के ऊपर की भूसी चावल नहीं है परन्तु चावल का खोल अवश्य है। इस खोल के बिना चावल की उत्पत्ति, स्थिति और वृद्धि नहीं हो सकती। इस खोल ने चावल को उन्नत होने में बड़ी सहायता दी है। यदि यह खोल ना होता तो चावल की रक्षा नहीं हो सकती थी। इसलिए चावल की भूसी को व्यर्थ होना अनावश्यक समझना बड़ी भारी भूल है। हाँ बड़ी भूल यह भी है कि उसी को ही चावल समझा जाए। धान चावल और भूसी दोनों का नाम है। इसी प्रकार संस्कार के दो रूप होते हैं एक आन्तरिक रूप और दूसरा बाह्य रूप। बाह्य रूप आन्तरिक महत्व की रक्षा करता है। वह उसकी संसार में जीवित रहने में सहायता करता है। बाह्य रूप का नाम रस्मो रिवाज है। रस्मो रिवाज ना होते तो संस्कारों का आन्तरिक महत्व भी कभी का नष्ट हो जाता। अतः रस्मो रिवाज संस्कार नहीं हैं किन्तु संस्कार का एक भाग अवश्य हैं।

हम ऊपर कह चुके हैं कि संस्कार का अर्थ है शुद्धिकरण या विकास। जब बच्चा उत्पन्न होता है तो वह न पूर्ण ही होता है और न शुद्ध। प्रायः हमने लोगों को यह कहते सुना है कि बच्चा निर्दोष होता है, उसका मन सफेद चादर के समान निर्मल होता है और केवल संसार में आकर ही वह दोषों को

सीखने लगता है। परन्तु याद रखना चाहिए यह वैदिक सिद्धान्त नहीं है। ईसाई और मुसलमान लोग बच्चों को मासूम अर्थात् निर्दोष इसलिए कहते हैं कि वह आवागमन और भूतपूर्व जीवन पर विश्वास नहीं रखते। वह समझते हैं कि ईश्वर जीव को बनाता है अतः वह शुद्ध ही होगा। इंग्लैंड के विख्यात फिलॉस्फर लॉक ने भी बच्चे के मस्तिष्क को श्वेत निर्मल पट्टी से उपमा दी है। वह कहता है कि जिस प्रकार श्वेत पट्टी पर तुम जो चाहो वो लिख सकते हो, उसी प्रकार बच्चे का मस्तिष्क भी पहले निर्मल होता है और संसार के बाह्य प्रभाव उस पर पड़ने लगते हैं। लॉक महाशय के दार्शनिक विचारों की मीमांसा का अवसर न होने से हम यहाँ उनकी थ्योरी पर अधिक कुछ नहीं कहते, परन्तु इतना अवश्य है कि शिक्षण शास्त्र की नींव ऐसे भ्रम मूलक सिद्धान्त पर रखना बड़ी भूल है। बच्चा शारीरिक, वाचिक, मानसिक तथा आत्मिक किसी अपेक्षा से भी न तो पूर्ण ही होता है और ना शुद्ध इसलिए उसकी अपूर्णता और अशुद्धि दोनों को दूर करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है, इन्हीं साधनों का नाम संस्कार है।

जीवात्मा जब एक शरीर को त्याग कर दूसरे शरीर में जाता है तो उसके पूर्व जन्म के प्रभाव उसके साथ जाते हैं। इन प्रभावों का वाहक सूक्ष्म शरीर होता है जो जीवात्मा के साथ एक स्थूल शरीर से दूसरे स्थूल शरीर में जाता है। इन प्रभाव में कुछ बुरे होते हैं और कुछ अच्छे। जब जीवात्मा दूसरे शरीर में प्रविष्ट होता है तो उसको इस नई परिस्थिति में सहस्रों अन्य प्रभाव मिलते हैं इनमें से कुछ तो बुरे प्रभावों के अनुकूल होते हैं और कुछ भलों के। भले प्रभाव, भले प्रभावों का स्वागत करना चाहते हैं और बुरे, बुरे का। इसको स्पष्ट करने के लिए हम मोटे से दो उदाहरण देते हैं। पहला रेल के डिब्बे का है। कल्पना कीजिए कि एक डिब्बे में २०० मनुष्य भरे हैं उनमें कुछ बुरे और कुछ भले हैं। यह रेल आगे के स्टेशन पर रुकती है जहाँ सैकड़ों मनुष्य खड़े हैं। स्वभावतः बुरे आदमी बुरों को भीतर लेने का यत्न करेंगे और भले भलों को। यदि भलों का प्राबल्य है तो वह बुरो को ना आने देंगे और यदि बुरों का प्राबल्य है तो वह भलों को रोकेंगे। यही दशा पूर्व जन्म के प्रभावों की है।

दूसरा उदाहरण खेत का है। खेत में आप गाजर मूली और शलजम के बीज बोते हैं यह भी समान नहीं हैं। खेत के खाद में तीनों प्रकार के बीजों की सजातीय सामग्री उपस्थित है परन्तु गाजर का बीज अपनी सजातीय वस्तुओं का तो ग्रहण करता है और शेष को छोड़ देता है। वही मूली और शलजम के बीजों का हाल है। इसी प्रकार पूर्व जन्म के प्रभाव कार्य करते हैं। यही कारण है कि एक सी परिस्थिति में रहकर भी दो बच्चे दो प्रकार के हो जाते हैं। यदि बच्चे आरम्भ से ही एक समान शुद्ध होते तो उनमें एक-सी परिस्थिति में रहकर भेदभाव नहीं होता।

अब देखना चाहिए कि संस्कारों की आवश्यकता कहाँ पड़ती है? बच्चा भले और बुरे प्रभावों को लेकर अपने नए जीवन में प्रवेश करता है उसके पालन-पोषण का भार समाज पर पड़ता है अतः समाज के नियम इस प्रकार के होने चाहिए कि पूर्वजन्म के बुरे प्रभावों का धीरे-धीरे तिरोभाव होता जाए और अच्छे प्रभाव उन्नत दशा को प्राप्त होते जाएँ। समाज ऐसा करने के लिए जिन नियमों का पालन करता है उनको ही संस्कार कहते हैं। **क्रमश.......**

– गंगाप्रसाद एम. ए. (हेड मास्टर)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी. एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ. मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला,

शाकाहार बन रहा विश्व-व्यापी

क्या आपको यह जानकर आनन्द नहीं होगा कि दुनिया के सबसे ज्यादा शुद्ध शाकाहारी लोग भारत में ही रहते हैं। ऐसे लोगों की संख्या ४० करोड़ से ज्यादा है। ये लोग मांस, मछली और अण्डा वगैरह बिल्कुल नहीं खाते। यूरोप, अमेरिका, चीन, जापान और मुस्लिम देशों में मुझे कई बार यह वाक्य सुनने को मिला कि 'हमने ऐसा आदमी जीवन में पहली बार देखा, जिसने कभी मांस खाया ही नहीं।' दुनिया के सभी देशों में लोग प्रायः मांसाहार और शाकाहार दोनों ही करते हैं। लेकिन एक ताजा खबर के अनुसार ब्रिटेन में इस साल ८० लाख लोग शुद्ध शाकाहारी बनने वाले हैं। वे अपने आप को 'वीगन' कहते हैं। अर्थात् वे मांस, मछली, अण्डे के अलावा दूध, दही, मक्खन, घी आदि का भी सेवन नहीं करते। वे सिर्फ अनाज, सब्जी और फल खाते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि वे पशु-पक्षी की हिंसा में विश्वास नहीं करते। वे भारत के जैन, अग्रवाल, वैष्णव और कुछ ब्राह्मणों की तरह इसे अपना धार्मिक कर्तव्य मानकर नहीं अपनाए हुए हैं। इसे वे अपने स्वास्थ्य के खातिर मानने लगे हैं। न तो उनका परिवार और न ही उनका मजहब उन्हें मांसाहार से रोकता है लेकिन वे इसलिए शाकाहारी हो रहे हैं कि वे स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त दिखना चाहते हैं। मुम्बई के कई ऐसे फिल्म अभिनेता मेरे परिचित हैं, जिन्होंने 'वीगन' बनकर अपना वजन ४०-४० किलो तक कम किया है। वे अधिक स्वस्थ और अधिक युवा दिखाई पड़ते हैं। सच्चाई तो यह है कि शुद्ध शाकाहारी भोजन आपको मोटापे से ही नहीं, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और हृदय रोगों से भी बचाता है। इसे किसी धर्म-विशेष के आधार पर विधि-निषेध की श्रेणी में रखना भी जरा कठिन है, क्योंकि सब धर्मों के कई महानायक आपको मांसाहारी मिल सकते हैं। वैसे किसी भी मजहबी ग्रन्थ में यह नहीं लिखा है कि जो मांस नहीं खाएगा, वह घटिया हिन्दू या घटिया मुसलमान या घटिया ईसाई माना जाएगा। वास्तव में दुनिया में मांसाहार बन्द हो जाए तो प्राकृतिक संसाधनों की भारी बचत हो जाएगी और प्रदूषण भी बहुत हद तक घट जाएगा। इन विषयों पर पश्चिमी देशों में कई नए शोध-कार्य हो रहे हैं और भारत में भी शाकाहार के विविध लाभों पर कई ग्रन्थ लिखे गए हैं। दूध, दही, मक्खन और घी आदि के त्याग पर कई लोगों का मतभेद हो सकता है। यदि वे 'वीगन' न होना चाहें तो भी खुद शाकाहारी होकर और लाखों-करोड़ों लोगों को प्रेरित करके एक उच्चतर मानवीय जीवन-पद्धति का शुभारम्भ कर सकते हैं। अब शाकाहार अकेले भारत की बपौती नहीं है। यह विश्वव्यापी हो रहा है।

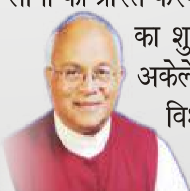

- डॉ. वेद प्रताप वैदिक
२४२, सेक्टर- ५५, गुडगाँव

नैतिक उत्साह

कथा सरित

भारतीय राष्ट्रीय कौंसिल के तत्कालीन अध्यक्ष अल्फ्रेड वेब ने कहा था, 'सिलाई मशीनों के आपूर्तिकर्त्ताओं के एजेण्टों के अनुभव के अनुसार अन्य देशों में कर्जदारों में से १०% उनका भुगतान नहीं करते थे। भारत में ऐसे लोगों की संख्या केवल १% थी। और वह १% भारत में रहने वाले यूरोपियन लोगों के कारण थी। भारतीय दर्जी ऋण चुकाने में सजग और तत्पर रहते थे। ऐसा करने में विफल रहने पर वे सदैव सिलाई मशीन ही लौटा देते थे। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक तथ्य यह था कि बाजार, दुकान, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों में सौदागर अपने समक्ष रुपयों के खुले सन्दूक लेकर बैठते थे जिन्हें कभी कोई हाथ भी नहीं लगाता था। यूरोप में कोई ऐसा करने का सोच भी नहीं सकता।' कर्नल स्लीमैन का यह कथन भी उल्लेखनीय है, 'मेरे समक्ष ऐसे सैकड़ों मामले आ चुके हैं, जिसमें किसी भारतीय की सम्पत्ति, स्वतंत्रता या जीवन उसके झूठ बोलने पर निर्भर था, परन्तु उसने झूँठ बोलने से इनकार कर दिया।'

चार्ल्स वोरसेलेस ने कहा था, 'मैंने भारतवर्ष में २२ वर्ष बिताए हैं और तत्पश्चात् १७ वर्ष इंग्लैंड में रह चुका हूँ। मैं जितना ही अपने देशवासियों को देखता हूँ, उतना ही मुझे भारतीय लोग अच्छे लगते हैं।' डॉ. ग्राहम ने कहा था, 'हिन्दू लोग जहाँ भी गए, उन्होंने वहाँ के लोगों के आध्यात्मिक स्तर को सुधारा।' सर जार्ज बर्डवुड ने कहा था, 'हिन्दू नारियाँ पवित्र और पतिव्रता हैं। स्वच्छता में भारतीय लोग संसार के अन्य सभी देशवासियों से महान् हैं।' ये सब कथन प्राचीन भारतीय लोगों की नैतिक निष्ठा के साक्ष्य हैं।

कौटिल्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के गुरु थे, पर उन्होंने स्वयं को महलों के सुख-विलास से दूर रखकर एक छोटी-सी कुटिया में निवास किया। सम्राट् अशोक महान् वीर थे, पर कलिंग-युद्ध के भयानक संहार दृश्य और विधवाओं व अनाथों के हृदय-विदारक आर्तनाद ने उनके हृदय को द्रवित कर दिया। उन्होंने युद्ध को तिलांजलि देकर त्याग और सेवा के आदर्शों को अंगीकार कर लिया। उन्होंने अनुभव किया कि धर्म या अध्यात्म के पथ पर चलना ही सच्ची विजय है। उन्होंने अपने जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के उच्च आदर्शों को स्वीकार करके सभी सद्विचारवान लोगों से प्रभूत सम्मान प्राप्त किया। उन्होंने कहा था, 'किसी भी देश के नागरिकों को सहानुभूति, उदारता, सत्यनिष्ठा, स्वच्छता, दया और सज्जनता जैसे सदगुणों को अपनाना चाहिए। उन्हें राजा के आदेशों के कारण नहीं, अपितु स्वेच्छापूर्वक भलाई के पथ का अनुसरण करना चाहिए। बाहरी दबाव के जरिये आरोपित अच्छाइयों को अपनाने की अपेक्षा स्वयं ही चुना हुआ भला पथ बेहतर है।'

विश्व-इतिहास के लेखक एच.जी. वेल्स ने लिखा है- 'विश्व के नरेशों और सम्राटों के नभ-मण्डल में सम्राट् अशोक का नाम ध्रुवतारे की भाँति चमकता है।' उनके कथन में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं है। सम्राट् अशोक का प्रेम और सहानुभूति विश्व के कोने-कोने में फैल गई थी। पूरे विश्व के इतिहास में सम्राट् अशोक की जोड़ का दूसरा कोई सम्राट् भला कहाँ मिल सकता है? उनकी निम्नलिखित उक्ति उनके मन तथा हृदय की एक झलक प्रस्तुत करती है- 'मैंने सड़कों के दोनों तरफ वट-वृक्ष लगवाए हैं, ताकि मनुष्यों तथा पशुओं को उनकी शीतल छाया मिल सके। मैंने सड़कों के दोनों तरफ आम के बगीचे लगवाए हैं, हर मील पर कुएँ खुदवाए हैं और लोगों के ठहरने के लिए धर्मशालाओं का निर्माण कराया है। 'माता-पिता की सेवा सत्कर्म है। पशुओं को न मारना या उन्हें कोई क्षति न पहुँचाना सत्कर्म है। मितव्ययता के द्वारा भविष्य के लिए कुछ बचा रखना सत्कर्म है।'

सम्राट् अशोक 'देवानां प्रिय प्रियदर्शी' की उपाधि से प्रसिद्ध थे। उन्होंने कहा था, 'मैं भोजन कर रहा होऊँ, रनिवास या अन्तःपुर में होऊँ या पशुशाला, पालकी या उद्यान में- कहीं भी क्यों न होऊँ, लोग मेरे पास आकर अपनी समस्याओं के बारे में बता सकते हैं। मैं उनकी सभी समस्याओं के विषय में जानना चाहता हूँ।

'मैं, 'देवानां-प्रिय प्रियदर्शी' उपहार तथा आदर के साथ हर धर्म के लोगों, सभी भिक्षुओं और सभी गृहस्थों का सत्कार करता हूँ।

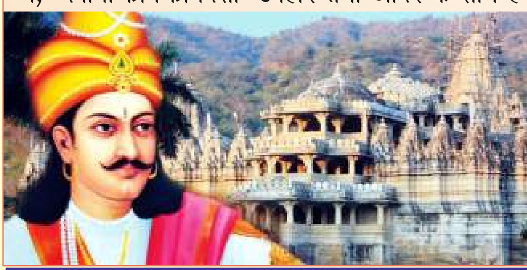

अन्य धर्मों के लोगों का सर्वदा सम्मान करना चाहिए। इससे अपना धर्म सुदृढ़ बनता है और अन्य सभी धर्मों की सहायता होती है; अन्यथा दोनों ही धर्मों की हानि होती है। जो अपने धर्म के उत्थान के उत्साह में आकर केवल अपने धर्म का सम्मान करके, अन्य धर्मों की निन्दा करता है, वह अपने धर्म को हानि पहुँचाता है। मेल-मिलाप सदैव लाभकारी है। आपस में मेल-जोल रखने से अन्य धर्मों के बारे में जानकारी मिलती है

और उनकी भी सहायता होती है। 'देवानां-प्रिय' की यही इच्छा है। सभी धर्मों के लोगों का सच्चा ज्ञान तथा समृद्धि प्राप्त हो। अपने विशेष धर्म के प्रति निष्ठा रखनेवालों के मन में यह बात बैठा देनी होगी। सभी धर्म फलें-फूलें। 'देवानां-प्रिय' के मत में ईश्वरोपासना या दान की अपेक्षा अन्य धर्मों का सम्मान करना कहीं बेहतर और महानतर कृत्य है।

'सभी लोग मेरी सन्तानें हैं। जैसे मैं इहलोक और परलोक में अपनी सन्तानों की सुख-समृद्धि की कामना करता हूँ, वैसे ही मैं सभी लोगों के सुख की भी इच्छा करता हूँ। आप लोग शायद दूसरों के प्रति मेरी शुभ-कामना की तीव्रता नहीं जानते।

'गर्भवती गायों, भेड़ों या सुअरों या दुधारु बकरियों को मांस के लिए न मारा जाए। छह महीने से कम आयु के बछड़ों को न मारा जाए। मुर्गों को पीड़ित न किया जाए। जीवित प्राणियों को आग में न जलाया जाय। वन्य पशुओं को बाहर निकालने के लिए या किसी अन्य उद्देश्य से जंगलों को न जलाया जाए। किसी पशु के भोजनार्थ किसी अन्य जीवित प्राणी को न दिया जाए।'

क्या ये उक्तियाँ प्रमाणित नहीं करतीं कि सच्ची आध्यात्मिक पृष्ठभूमि या सच्चे धर्मभाव से निःस्वार्थ प्रेम की ऐसी धारा निःस्त्रित होती है, जो समग्र संसार का हित-साधन करती है?

सम्राट् हर्षवर्धन हर पाँचवें वर्ष अपनी सारी धन-सम्पदा विद्वानों व निर्धनों के बीच वितरित कर दिया करते थे। सम्राट् पुलकेशी द्वितीय के राज्य में आभूषणों से सुसज्जित नारियाँ निर्भय होकर सड़कों पर अकेली चल सकती थीं। राजा कृष्णदेव राय ने कवि अल्लसनी पेद्दना को अपने ही हाथों से रत्नजड़ित पादुका पहनायी थी। राजा स्वयं ही शोभयात्रा में कवि पेद्दना को पालकी में बैठाकर वहन करते थे। छत्रपति शिवाजी ने अनेक भयंकर युद्धों के द्वारा विजित अपने पूरे साम्राज्य का स्वामित्व अपने गुरु, समर्थ रामदास के भिक्षापात्र में डालने में जरा भी संकोच नहीं किया। जब उनके सैनिक अधिकारियों ने उपहार-स्वरूप एक सुन्दर युवती लाकर उन्हें भेंट की, तो शिवाजी ने उसे अस्वीकार करके ससम्मान उसके पति के पास भेज दिया। यद्यपि उन्होंने मुसलमान बादशाहों की क्रूरता और हिंसा देखी थी, तथापि उन्होंने कभी किसी मसजिद को क्षति नहीं पहुँचाई और न ही कुरान का अनादर किया। इस प्रकार शिवाजी ने अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की एक आदर्श भावना प्रकट की। दुर्गादास राठौर ने अपने पास बन्दी के रूप में रखी औरंगजेब की पौत्री को पढ़ाने के लिए सुदूर अजमेर से एक मुसलमान प्रशिक्षिका को बुला भेजा था। राजपूत योद्धाओं की वीरता समस्त संसार में अद्वितीय थी। ऐसी उत्कृष्ट भावना के पीछे कौन-सा प्रभाव सक्रिय था? क्या यह हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक परम्परा में निहित उच्च आदर्श ही नहीं था?

साभार- जीने की कला

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	१	क १	■	२ प्र	२	पा	२	क २	■
■	३ पु	३	३	र्थ ३	■	४	४ मा	४	ज ४
५	५ रा	५	६	ध ६	६	७	७ ण	७	न ७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो-जो ग्रन्थ वेद से विरुद्ध हैं, उन-उन का प्रमाण करना क्या होना है?

२. वेद सत्य अर्थ का क्या है?

३. महापुरुष बड़े उत्तम धर्मयुक्त ...... से होता है?

४. यामुनाचार्य के नाम से जो चक्रांकितों का आचार्य हुआ उसका क्या नाम था?

५. जो व्यासादि महर्षियों के नाम से मनमानी असम्भव गाथायुक्त ग्रन्थ बनाए उनका क्या नाम रखा?

६. मूर्ति पूजा करना क्या है?

७. प्रीति होने का कारण क्या है?

भूल सुधार- फरवरी माह की सत्यार्थ प्रकाश पहेली में प्रश्न संख्या ४ पर गलती से ''यावनाचार्य के गुरु'' के स्थान पर ''यावनाचार्य के चेले'' लिखा गया है। प्रश्न गलत है लेकिन जो उत्तर में अगर 'मुनिवाहन' भरेंगे तो स्वीकार होगा। भूल के लिए खेद है।

''विस्तृत नियम पृष्ठ १८ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०२२

समाचार

उपाचार्य विशाल जी का पाणिग्रहण संस्कार

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास के उपाचार्य श्री विशाल जी आर्य का पाणिग्रहण संस्कार आचार्या मधुलिका जी आर्या (स्नातिका, कन्या

गुरुकुल, चोटीपुरा) के साथ दिनांक ०६ फरवरी २०२२ को होने के उपरान्त संस्थान में आशीर्वाद समारोह का आयोजन माघ शुक्ला १३/२०७८ दिनांक १३ फरवरी २०२२ को सम्पन्न हुआ। इसमें सुमेरपुर से भजनोपदेशक पण्डित केशवदेव जी शर्मा भी पधारे तथा भागलभीम ग्राम व भीनमाल नगर के अनेक महानुभाव व बच्चे उपस्थित हुए। पूज्य आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने अपने शिष्य व उनकी धर्मपत्नी को आशीर्वाद दिया।

श्रीमती मधुलिका जी आर्या ने श्री विशाल जी आर्य के साथ वैदिक विज्ञान पर दिनांक १४-०२-२०२२ से कार्य भी प्रारम्भ कर दिया।

- पारस सोलंकी, सोशल मीडिया प्रभारी

श्री रवीन्द्र राठौड़ का विवाह संस्कार

न्यास के जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद कुमार राठौड़ के सुपुत्र चिरंजीव

रवीन्द्र राठौड़ का पाणिग्रहण संस्कार दिनांक ५ फरवरी २०२२ को डबोक, उदयपुर निवासी श्री किशन जी खोखावत की सुपुत्री आयुष्मती दुष्यन्ता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने इस संस्कार को सम्पन्न करवाया।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार नव वर-वधू के गृहस्थ जीवन की मंगलकामना करते हुए सम्पूर्ण परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

'आर्य समाज हिरण मगरी के दयानन्द कन्या विद्यालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती पर यज्ञ, भजन एवं उद्बोधन'

आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर-४ में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती कार्यक्रम दिनांक १२ फरवरी २०२२ को हुआ। श्री इन्द्र प्रकाश के पौरोहित्य में श्रीमती एवं श्री निरंजन नेभणानी ने अपनी पौत्रियों सहित यज्ञ के मुख्य यजमान के पद को सुशोभित किया। योग साधक जिग्नेश शर्मा ने बताया कि इस पावन अवसर पर दयानन्द कन्या विद्यालय की छात्रा ज्योति गर्ग के शुभ जन्मदिवस पर उपरणा ओढाकर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ शुभाशीष दिया गया। यज्ञोपरान्त श्रीमती सरला गुप्ता ने 'उपकार अनेक जगत् पर कर गया एक ब्रह्मचारी'

सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। दयानन्द कन्या विद्यालय की माही राठौड़ ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन परिचय, कोमल वैष्णव ने प्रेरक प्रसंग, कृष्णा गर्ग ने आर्य समाज के दस नियम, गौरी लोहार ने ऋषि पर काव्य, अध्यापिका अल्का मेहता ने ऋषि का सम्पूर्ण जीवन परिचय एवं सामूहिक सुमधुर भजन 'ऋषि का ऋणी है ये संसार' आदि प्रस्तुत किया। निरंजन नेभणानी की पौत्रियों ने भी सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। श्री इन्द्र प्रकाश ने महर्षि दयानन्द सरस्वती पर सारगर्भित उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में, विशेष कर नारी-शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। शिक्षा वह साधन है जिसका उपार्जन समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य है। कार्यक्रम संचालन ललिता मेहरा ने किया। आभार एवं धन्यवाद डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने किया। शान्तिपाठ भँवर लाल आर्य एवं कृष्ण कान्त सोनी ने किया। प्रसाद व्यवस्था शारदा गुप्ता ने की। - जिग्नेश शर्मा

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

२. प्रकाशन की नियत अवधिः– मासिक

३. मुद्रक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

४. प्रकाशक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

५. सम्पादक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– ०७.०३.२०२२

प्रकाशक के हस्ताक्षर

हलचल

एक बेटी हो गई धर्मांतरण की भेंट

मासूम जिन्दगियाँ अगर मजबूर की जाएँ, उन पर शारीरिक और मानसिक अत्याचार किया जाए और उस अत्याचार की सीमा इतनी बढ़ जाए कि एक जिन्दगी उसकी भेंट चढ़ जाय, उसे आत्महत्या करनी पड़ जाए तो ऐसी व्यवस्था को आप क्या कहेंगे? व्यवस्था की संवेदनहीनता की पराकाष्ठा लावण्या की आत्महत्या के मामले में साफ नजर आती है। लावण्या सेक्रेड हार्ट हायर सेकेंडरी स्कूल मिसल पट्टी, तंजावुर तमिलनाडु में१२वीं की छात्रा थी। और उसी के हॉस्टल में रहती थी। ऐसी खबरें आए दिन गाहे-बगाहे आती रहती हैं कि ईसाई मिशनरी लोक सेवा की आड़ में स्कूल व अस्पताल खोल कर उसकी ओट में धर्मांतरण का अपना खेल खेलते रहते हैं। पूरे देश में नजर डालें तो हम देखेंगे कि कई राज्यों में तो कुछ वर्षों में डेमोग्राफी ही बदल गयी है। ईसाई मत मानने वालों की संख्या कई-कई गुना बढ़ गई। ऐसा नहीं कि यहाँ किसी विषय को लेकर के शास्त्रार्थ हुआ हो और उसमें यह साबित हुआ हो कि ईसाई धर्म सबसे सच्चा और सबसे अच्छा है और उसके परिणाम स्वरूप मत परिवर्तन हुए हैं, बल्कि दूसरी ओर छल-बल-लालच का भरपूर प्रयोग कर धर्मांतरण कराए गए, इसके चिह्न साफ दिखाई देते हैं। लावण्या का स्वयं का मरने से पूर्व दिए dying declaration का वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें उसने विद्यालय प्रशासन पर इस बात का आरोप लगाया है कि उस पर धर्मान्तरण के लिए दबाव डाला जा रहा था और जब उसने मना कर दिया तो उसे छुट्टियों पर भी नहीं जाने दिया और साफ-सफाई बर्तन मांजने के काम पर ही नहीं बल्कि टॉयलेट साफ करने के काम पर उसको लगा दिया। किशोरी लावण्या इस तनाव को सहन ना कर सकी और विद्यालय के लोन में काम आने वाले कीटनाशकों का सेवन कर अपनी जान देने का उसने प्रयास किया। अस्पताल में कई दिनों तक जीवन और मृत्यु के बीच में जूझती रही। जब उसे होश आया तो उसने अपने बयान दर्ज कराए जिसमें विद्यालय प्रशासन पर उक्त आरोप लगाए। मामला दर्ज करने के बाद जब कोर्ट में गया तो कोर्ट ने इस वीडियो की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए कहा। इस मामले में एक विशेष बात यह रही कि मद्रास हाई कोर्ट ने सीबीआई जाँच के आदेश दिए तो तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी लगाई कि इस जाँच को रोका जाए। परन्तु सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु सरकार की याचिका खारिज कर दी और मद्रास हाईकोर्ट के आदेश में कोई भी हस्तक्षेप से इंकार कर दिया और कहा कि कोर्ट का कर्तव्य है कि बच्ची को मृत्यु उपरान्त न्याय दिलाएँ। मद्रास उच्च न्यायालय का यह कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि जिस तरह की परिस्थितियाँ पैदा हुई हैं उनका

सम्मिलित रूप से यह प्रभाव निश्चित रूप से पड़ रहा है कि जाँच सही दिशा में नहीं चल रही है और क्योंकि एक उच्च मंत्री ने स्वयं एक पक्ष निर्धारित कर लिया है, इसलिए राज्य की पुलिस इसमें जाँच नहीं कर सकती। मद्रास उच्च न्यायालय का यह कथन सत्य प्रतीत होता है क्योंकि जिस हॉस्टल वार्डन पर लावण्या को प्रताड़ित करने के आरोप थे उसे जब तंजावुर जिला न्यायालय ने जमानत प्रदान की और वह तिर्ची केन्द्रीय कारागार से बाहर आई तो डीएमके के एक विधायक ने उसे शॉल ओढ़ाकर उसका सम्मान किया।

और अब सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में सीबीआई को जाँच की अनुमति प्रदान कर दी है ।

अंग्रेजों के समय में सरकारी संरक्षण में ईसाई मिशनरियों ने धर्मांतरण के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए थे यह तो समझ में आता है क्योंकि तब शासक अंग्रेज स्वयं ईसाई थे, और धर्मान्तरण उनकी प्राथमिकता थी। परन्तु आज स्वतंत्र भारत में जिसके संविधान में बाद में धर्मनिरपेक्ष शब्द तक जोड़ दिया गया, वहाँ आज के समय में इस प्रकार के कुचक्र सम्भव हो पा रहे हैं यह सोचकर ही आश्चर्य होता है। अति आवश्यक है कि बलात धर्मांतरण, छल बल और लालच का प्रयोग कर धर्मांतरण करने के प्रयत्न वाले इस केस में, आरोपियों को अतिशीघ्र चिह्नित कर कठोर सजा दी जानी चाहिए ताकि धर्मांतरण का यह सिलसिला पूर्ण रूप से समाप्त होने की दिशा में यह एक कदम साबित हो।

दु:खद समाचार

आर्य जगत् के प्रसिद्ध व यशस्वी भजनोपदेशक पण्डित श्री रामस्वरूप जी (ताऊ जी) का निधन हो गया। पिछले कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे उनका इलाज घर पर ही चल रहा था। आपका यूँ अचानक चले जाने से आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है। आपका सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में ही व्यतीत हुआ था, बहुत ही मृदुभाषी, व्यवहार कुशल, प्रतिभा सम्पन्न बहुआयमी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। शोक की इस घड़ी में परिजनों को इस दारुण दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १०/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १०/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा, श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री हर्षवर्द्धन आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; सैनिक विहार (दिल्ली), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालंधर, श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरि.), श्री नन्द लाल आर्य; बेतिया (बिहार), श्री आर. सी. आर्य; कोटा (राज.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 18 पर अवश्य पढ़ें।

—Over 100 shades—
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CAPRI | ANKLE LENGTH | CHURIDAR | KURTI PANT
#GoGirlGo
Chitrangada Singh
Buy Online: www.dollarshoppe.in/ snapdeal amazon.in SHOPCLUES www.dollarglobal.in
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

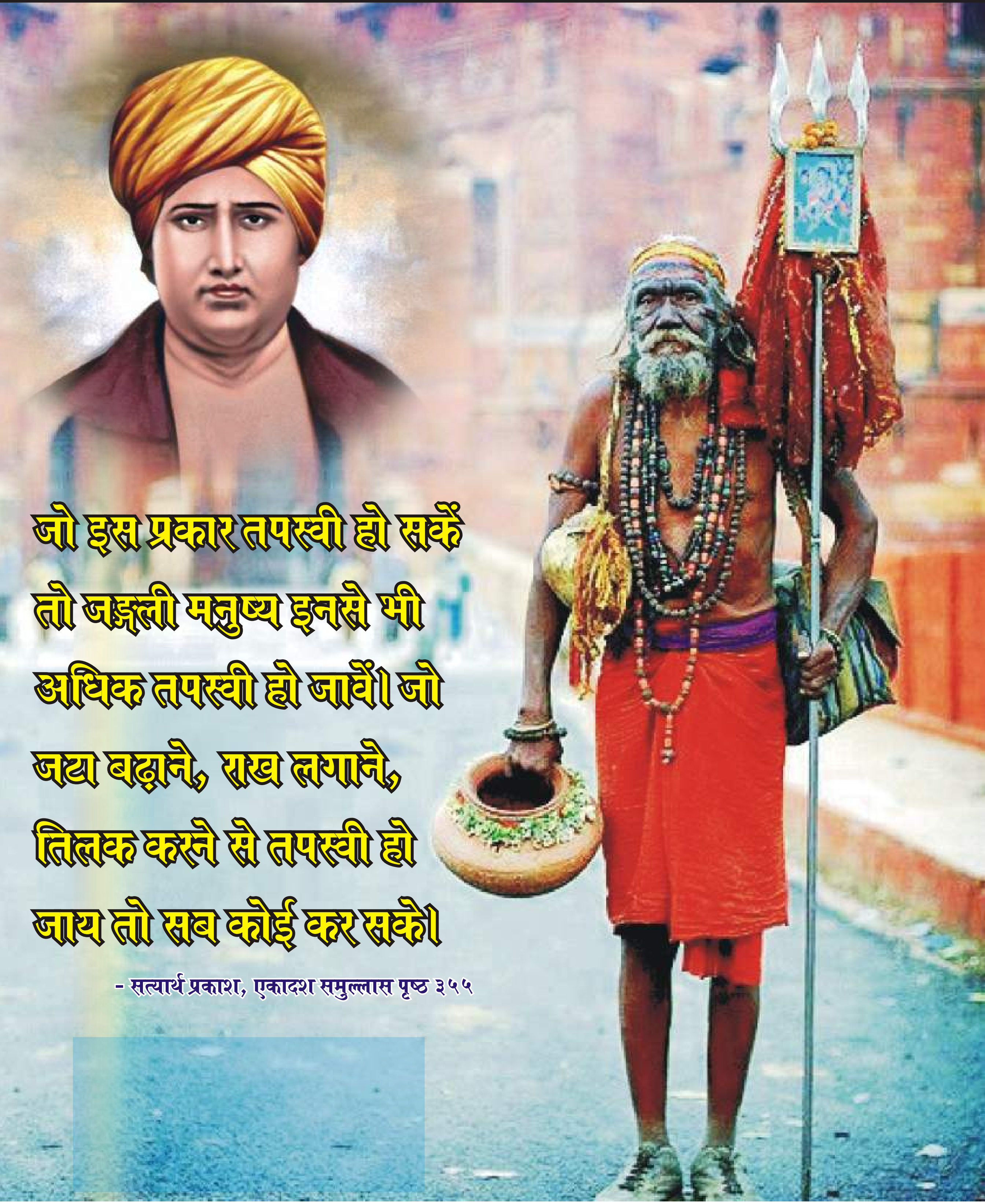

जो इस प्रकार तपस्वी हो सकें तो जङ्गली मनुष्य इनसे भी अधिक तपस्वी हो जावें। जो जटा बढ़ाने, राख लगाने, तिलक करने से तपस्वी हो जाय तो सब कोई कर सके।

- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३५५

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर